महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 20 | मुंबई, 16 नवंबर से 30 नवंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

शरद पवार द्वारा विरार में अमूल डेरी के संयंत्र का उदघाटन

मुंबई, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री पृथ्वीराज चाव्हाण कि मौजदगी में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार ने विरार में रु १८० करोड़ के अमूल डेरी संयंत्र का उदघाटन करते हुए कहा कि सरकार अगले दस वर्षो में डेरी एवं दुग्ध उत्पादन क्षेत्र को रु १७००० करोड़ इसके विकास एवं विस्तार के लिए आवंटित करेगी.

हाल ही स्थापित ये संयत्र विश्व में अपने तरह का अनूठा संयत्र हे जहा ५०००० लीटर दूध प्रति घंटा संकलन व प्रोसेस होगा एवं इसकी पैकिंग , कैरेटस वगेरह की साफ़ सफाई का जिम्मा रोबोटस के जरिये होगा. अमूल डेरी द्वारा मुम्बई एवं उपनगरों की रोजाना कि मांग को पूरा करने के लिए इसकी उत्पादन क्षमता दस लाख लीटर प्रतिदिन रखी गयी हे जिसे भविष्य में मांग एवं आपूर्ति को देखते हुए दुगुना भी किया जा सकेगा.

विरार स्थित इस इकाई से २ लाख लीटर आइस क्रीम , १ .५ लीटर छाछ व ५०००० लीटर दही प्रतिदिन का उत्पादन किया जा सकेगा.

Amul
The Taste of India

बिजली उपकरण आयात की जरूरत दस साल तक नहीं होगी

नागपुर। बिजली उपकरणों के मामले में देश आत्मनिर्भर हो रहा है। भेल व एलएंडटी जैसे सरकारी उपक्रम की कंपनियों की उपकरण निर्माण क्षमता बढने से दस साल तक बिजली संयंत्र के लिए उपकरणों के आयात की जरूरत नहीं होगी। यह जानकारी देते हुए केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री प्रफुल पटेल ने विदर्भ में औद्योगिक निवेश बढ़ाने के लिए कारखानों को बिजली देने के मामले में नीतिगत सुधार का सुझाव भी दिया। उन्होंने कहा कि बिजली संयंत्रों के लिए ज्यादातर उपकरण आयात किए जाते हैं। लेकिन अब उपकरणों के आयात की अगले दस साल तक जरूरत नहीं होगी। उपकरणों के आयात पर नियंत्रण का प्रयास किया जा रहा है। चीन से आनेवाले उपकरणों पर १० प्रतिशत कर लगाया जा रहा है। विदर्भ में औद्योगिक निवेश के मामले में आ रही अड़चनों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यहां बिजली दरों को लेकर उद्यमी परेशान हैं। दर में एक रुपए की कटौती पर्याप्त नहीं है। प्रकल्पवार बिजली दर तय करने की जरूरत है। बिजली खरीदी की छूट दी जानी चाहिए। मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री व राज्य के मुख्य सचिव से बिजली मामले में नीतिगत सुधार के लिए कई बार बात की गई है।पटेल ने कहा कि विदर्भ में औद्योगिक निवेश के लिए आयोजित एडवांटेज विदर्भ का फिलहाल लाभ मिलता नजर नहीं आ रहा है। जिस तरह से आयोजन किया जा रहा है, उसे देखते हुए नहीं लगता कि अगली बार भी एडवांटेज विदर्भ से कुछ निष्कर्ष निकलेगा।

मिहान के लिए मुख्यमंत्री चव्हाण द्वारा दूसरे रनवे की जरूरत पर जोर दिए जाने को पटेल ने अनावश्यक बताया। उन्होंने कहा कि फिलहाल दूसरे रनवे की आवश्यकता ही नहीं है। २५ साल बाद की आवश्यकता को देखते हुए किसी प्रकल्प की गति रोकना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि बूटीबोरी में ऑटोमोबाइल हब नागपुर व विदर्भ के विकास की दृष्टि से लाभकारी होगा।

कॉटन ९० लाख गांठ रहने के आसार

दिल्ली- भारत के निर्यात में ९ज़ गिरावट संभव : यूएसडीए मौजूदा मार्केटिंग वर्ष २०१३-१४ के दौरान भारत से कॉटन का आयात ९ फीसदी घटकर ९० लाख गांठ (प्रति गांठ १७० किलो) रह सकता है। अमेरिकी कृषि विभाग (यूएसडीए) ने एक रिपोर्ट में यह अनुमान पेश करते हुए कहा है कि विश्व बाजार में मांग की कमी और घरेलू बाजार में दाम ज्यादा होने के कारण निर्यात प्रभावित हो सकता है। पिछले मार्केटिंग सीजन २०१२-१३ (अगस्त-जुलाई) के दौरान ९९ लाख गांठ कॉटन का निर्यात किया गया था। यूएसडीए की रिपोर्ट के मुताबिक मौजूदा वर्ष का निर्यात अनुमान पिछले स्तर ९० लाख गांठ पर रखा गया है। भारत में कॉटन के दाम ज्यादा चल रहे हैं। जबकि चीन की मांग काफी हल्की है। भारत से इसका निर्यात काफी

(शेष पृष्ठ २ पर)

कोल्हापुर...मे ३ दिवसीय चलने वाले किसान मेले मे सृष्टी एग्रो न्यूज़ पेपर पहुंचा किसान मेले का शुभारम्भ महाराष्ट्र के कामगार मंत्री हसन मुश्रीफ ने किया उन्होने किसानो के मेले के महत्व के बारे मे बताया उन्होने कृषकों की प्रशंसा करी कहा महाराष्ट्र एक कृषि प्रधान राज्य है इसलिए ऐसे मेलो का महत्व बड़ जाता है मेले में पहले दिन किसानों कि उपस्तिथी कमा रही..

दुसरे दिन किसानो की उपस्तिथी , किसानो की जगरुकता बता रही थी! कि वह बाज़ार मे आने वाले नए उत्पाद व नयी तकनीक को लेकर कितने उत्साहित है दूसरी ओर उत्पाद कंपनियो ने हिस्सा लिया।

बनावटी हैं प्याज, टमाटर की ऊंची कीमतें, लोग खुद कर रहे हैं महंगा'

नई दिल्ली। प्याज और टमाटर को खरीदने में भले ही लोगों के आंसू निकल रहे हों, लेकिन कृषि सचिव आशीष बहुगुणा को कीमतों में यह बढ़ोतरी बनावटी नजर आ रही है। बहुगुणा ने कहा कि सब्जियों के उत्पादन में कोई कमी नहीं है। इसके बावजूद कीमतें बढ़ रही हैं। इसका कोई कारण समझ नहीं आ रहा। उन्होंने राजधानी दिल्ली में आसमान छूते दामों पर कहा (शेष पृष्ठ २ पर)

बढ़ा रबर का आयात

दिल्ली.अक्टूबर महीने में प्राकृतिक रबर का आयात ८१ फीसदी बढ़कर ३३,४८६ टन रहा है, जो अक्टूबर, २०१२ में १८,४६६ टन था। हालांकि आयात में इजाफे की दर मंद पड़ी है, क्योंकि सितंबर के दौरान आयात में २०८ फीसदी बढ़ोतरी दर्ज की गई थी। सितंबर में ४५,५८१ टन आयात हुआ था। कीमत के मोर्चे पर होने वाला फायदा अब भी रबर आधारित उद्योग को आयात के लिए लुभाता है। हालांकि इससे देसी

बाजार के लिए संकट पैदा हो रहा है। स्टैंडर्ड मलेशियाई रबर (एसएमआर) की वैश्विक कीमत घरेलू आरएसएस-४ ग्रेड से १२ रुपये प्रति किलोग्राम कम है, जिससे आयात अब भी फायदे का सौदा है और इसके आयात में लगातार इजाफा हो रहा है। आयात में हो रही बढ़ोतरी से स्थानीय बाजार में कीमतें गिर रही हैं, जिससे केरल के १० लाख से भी ज्यादा उत्पादक चिंतित हैं। राज्य के राजनीतिक गलियारों में रबर की कीमतों का मसला गरमा रहा है, क्योंकि यह केरल कांग्रेस जैसी कुछ राजनीतिक (शेष पृष्ठ २ पर)

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटैंट मैनेजर चाहिए.

संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

Contact
Mob : 09829220788

संपादकीय

एक पाती मेरी ...किसान

क्या किसान की ज़िन्दगी में सिर्फ खेत ही हैं? किसान भाई इस माह क्या करें? कपास को कीड़ों से कैसे बचाएं? टिण्डे की नई प्रजाति कौनसी है? कृषियत्रों की देखभाल कैसे करें? क्या बस यही है किसान जीवन? इसका मतलब यह नहीं कि किसानों को यह सब नहीं चाहिए, बल्कि यह है कि इन सब के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है जिसे किसानों को जानना है। आप यह मान बैठे हैं कि किसान सिवाय खेत के और कहीं नहीं जाता। अगर किसान कहीं नहीं जाता तो फिर कोर्ट-कचहरियों में वकीलों और अरायज़नव॰ीसों के बैंचों बैठे यह कौन लोग हैं? सरकारी अधिकारियों, तहसील और थानों में भेड़-बकरियों की तरह घूम रहे यह कौन लोग हैं? अनाड़ी डॉक्टरों के हाथों से किसी तरह बच निकलने के बाद बड़े शहर के सरकारी/गैर सरकारी हस्पतालों के फ़र्श पर पड़े यह कौन लोग हैं?धान-मण्डियों में तपते टीन के छप्परों के नीचे यह किन लोगों की भीड़ हैं? और याद करें कितनी और ऐसी जगह है जिनका यहां ज़िक्र नहीं है, पर किसान और उसका परिवार उन जगहों पर मौजूद होता है । और हर दिन अनेक समस्याओ से दो चार होता है हमे अपनी बात के लिए हमे सड़कों पर जाम नहीं लगाना, रेल नहीं रोकनी, बसें नहीं जलानी और किसी का घेराव भी नहीं करना। बस हमे अपने वोट की ताकत को पहचनना है हमे यह याद रखना है पहले किए वादों क्या हुआ चुनाव आते है अपने साथ वादों की बयार लाते है!. सभी जानते है भारत की राजनीति जो कि गाँवों में बसती है तो राजनीतिज्ञों को वादों की धरती भी गाँवों में ही मिलती है! हा मै किसान हूँ किसान की पहचान खेत ही है। लेकिन मै वो किसान हूँ जो देश की अर्थव्यवस्था मे अपनी सार्थक भूमिका निभाता है! सही उम्मीदवार को चुनना धर्म है मेरा और उम्मीदवार द्वारा किये गये वादो का हिसाब मांगना हक़ है मेरा

किसान भेड नहीं है जिसे हर कोई मूंड ले। स्थितियों में बदलाव सम्भव है। आवश्यकता है जागरूकता की तो किसान भाइयो वोट ज़रूर दो और सही उम्मीदवार का चुनाव करो और हाँ अपने घर की महिलाओ को भी वोट डालने के लिये भेजो ....

आपका मित्र
भारतीय .किसान ....

ऋतु कपिल
कार्यकारी संपादक

किसान मित्र — सरसों फसल में पोषक तत्व प्रबंधन

प्रश्न 1 : राई–सरसों की फसल में प्रमुख पोघ्क तत्वों की कितनी मात्रा डालने की आवश्यकता होती है ?

उत्तर किसान भाईयो, पौधों को एक स्वस्थ जीवन पूरा करने के लिए 16 पोघ्क तत्वों की आवश्यकता होती है और यदि इसमें से किसी एक पोष्ट क तत्व का भी अभाव हो जाये तो पौधे अपनी पूरी क्षमता से उपज नहीं दे पाते हैं। नेत्रजन, फास्फोरस, पोटाश और गंधक राई–सरसों फसल के प्रमुख पोघक तत्व हैं।

इन पोघ्क तत्वों की पूर्ति मुख्यतया उर्वरकों से की जाती है। उर्वरकों से सरसों के उत्पादन में वृद्धि तभी संभव है जब मिट्टी जाँच के आधार पर इनका समुचित मात्रा में प्रयोग किया जाय। सरसों की सिंचित फसल के लिए विभिन्न क्षेत्रों में परिस्थिति के अनुसार 80 से 125 किग्रा/हैक्टेयऱ तथा अधिकांश क्षेत्रों में 75 से 80 किग्रा/हैक्टेयऱ नेत्रजन पोषक तत्व की अनुसंशा की जाती है। चूंकि नत्रजन तत्व अधिक घुलनशील होता है इसीलिए इसकी आधी मात्रा बुवाई के समय तथा आधी पहली सिंचाई पर कलिका निकलने की अवस्था में देनी चाहिए।

फास्फोरस तत्व की 30 से 50 किग्रा मात्रा, पोटाश तत्व की 20 से 40 किग्रा और गन्धक तत्व की भी 20 से 40 किग्रा मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के पूर्व खेत में डालने की अनुसंशा की जाती है। गन्धक पोघ्क तत्व वाले उर्वरकों का उपयोग कर सरसों में तेल की मात्रा बढाई जा सकती है। इसलिए सदा गन्धक पोघ्क तत्व वाले उर्वरकों जैसे– जिप्सम, सिंगल सुपर फॉस्फेट या अमोनियम सल्फेट का इस्तेमाल बुवाई से पूर्व करें।

सरसों की बारानी खेती में सिंचित फसल की तुलना में पोघक तत्वों की आधी मात्रा ही अनुसंशा की जाती है अर्थात 40 से 60 किग्रा नत्रजन, 20 से 30 किग्रा फास्फोरस, 20 किग्प्र पोटाश व 20–40 किग्रा सल्फर तथा सभी पाघ्क तत्वों की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही डाली जानी चाहिये।

किसान भाईयो, इस बात का ध्यान रहे कि इन पोघ्क तत्वों के उर्वरकों को बीज से कम से कम 2 इंच नीचे डालें, जिससे जडों को इनकी उपलब्धता अच्छी तरह होती रहे। किसान भाईयो, फसल की उचित समय पर बुवाई तथा सिंचाई, बुवाई के 45–60 दिन पौध बढवार तक खेतों को खरपतवार रहित रखना तथा लवणीय तथा क्षारीय भूमि का समुचित प्रबंधन करना कुछ ऐसी बाते है, जिनका उर्वरकों के प्रभावी उपयोग में बहुत महत्व है।

प्रश्न : उर्वरक प्रबंधन में टॉप ड्रैसिंग क्या होता है? इसमें क्या सावधानी रखनी चाहिए?

उत्तरः किसान भाईयों, चूँकि नत्रजन पोघ्क तत्व बहुत अधिक घुलनशील होता है इसीलिए इसकी आधी अनुशंसित मात्रा बुवाई के समय तथा आधी पहली सिंचाई के बाद देनी चाहिए। सरसों की फसल के लिए अनुसंशित नेत्रजन की आधी मात्रा को पहली सिंचाई के बाद डालने की किया को टॉप ड्रैसिंग कहते हैं। नत्रजन पोषक तत्व की टॉप ड्रैसिंग के लिए यूरिया खाद डाला जाता है, जिसे पहली सिंचाई के तीन–चार दिन बाद जब खेत में पैर चिपचिपाते ना हों तब बिखेर कर डालें। टॉप ड्रैसिंग के लिए यूरिया खाद को खेत में सिंचाई से पहले डालना ठीक नहीं है।

प्रश्न : राई–सरसों के बीज में तेल की मात्रा बढाने में किस पोषक तत्व का महत्व है और उसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तरः राई–सरसों के बीज में तेल की मात्रा बढाने के लिए गन्धक पोषक तत्व वाले उर्वरकों का नियमित उपयोग करना चाहिए। इसलिए सदा गन्धक पोषक तत्व वाले उर्वरकों जैसे– जिप्सम, सिंगल सुपर फॉस्फेट या अमोनियम सल्फेट का इस्तेमाल बुवाई से पूर्व करें। यदि इनका उपयोग बुवाई पर नहीं किया जा सके तो सरसों की फसल के फूल की अवस्था में थायोयूरिया नामक उर्वरक के घोल का छिडकाव करें। इसके लिए थायोयूरिया नामक उर्वरक की 500 ग्राम मात्रा को 500 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार कर लें और सरसों के 45 एवं 60 दिन की फसल पर छिडकाव करें। चूंकि थायोयूरिया में 42 प्रतिशत गन्धक तथा 37 प्रतिशत नत्रजन पोषक तत्व मौजूद हैं इस कारण सरसों की पैदावार तथा बीज में तेल की मात्रा बढायी जा सकती है। अधिक प्रभाव के लिए थायोयूरिया का छिड़काव दोपहर बाद करना उपयुक्त रहता है।

सरसों फसल उत्पादन में विभिन्न सूक्ष्म पोघ्क तत्वों का प्रबंधन

सरसों के फसल उत्पादन में विभिन्न सूक्ष्म पोघ्क तत्वों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इन पोघ्क तत्वों की कमी से अनेक क्षेत्रो में सरसों की पैदावार प्रभावित हो रही है। सूक्ष्म पोघ्क तत्वों के प्रयोग से पहले मिट्टी की जाँच करा लेनी चाहिए। मिट्टी की जाँच से यह मालूम होता है कि भूमि में उपलब्ध पोघ्क तत्वों की कितनी मात्रा है ? ताकि जिस पोघ्क तत्व की कमी है उसकी पूर्ती की जा सके। अधिकांश सरसों उत्पादक क्षेत्रों में आजकल जिंक तथा बोरोन मुख्य सूक्ष्म पोघ्क तत्व है जिनकी कमी आजकल खेतो में देखी जा रही है।

सबसे प्रमुख हैं जिंक यानी जस्ता जिसके अभाव में पौधों की बढ़वार रूक जाती है। सरसों में यह फली की संख्या बढ़ाने में सहायता करता है। प्रयोगों के आधार पर जिंक की कमी वाली मिट्टियों में जिंक को डालने पर करीब 25–30 प्रतिशत की पैदावार में वृद्धि होती है। इसके लिए मिट्टी में बुवाई से पहले 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर अकेले या जैविक खाद के साथ प्रयोग किया जा सकता है। यह 3 से 4 फसलों तक पर्याप्त होता है। जिंक की कमी वाले क्षेत्र में यदि बुवाई से पहले जिंक सल्फेट का उपयोग नहीं किया गया है तो जिंकयुक्त रसायन का छिडकाव करें। इसके लिए 500 लीटर पानी में 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 1.0 किलोग्राम बुझे हुए चूने का घोल बना लें और उसे छान कर पौधे की 30 दिन की अवस्था से 15 दिन के अन्तराल पर 2 बार छिड़काव कर सकते हैं।

दूसरा सबसे प्रमुख सूक्ष्म पोघ्क तत्व बोरोन है जिसे हम सुहागा कहते हैं । अगर इसका अभाव हो जाये तो सरसों में फूल आने पर फलियों में दाने काफी कम हो जाते हैं। बोरोन की कमी के कारण पौधों का उपरी भाग मर जाता है और इसके पास से पत्तियाँ निकलना प्रारम्भ हो जाने से झाड़ीनुमा दिखने लग जाता है। इसके लिए 10 किलोग्राम बोरेक्स प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों में बुवाई से पूर्व मिला दिया जाये तो अच्छा लाभ मिलता है।

प्रश्न : समेकि पोघ्क तत्व प्रबंधन के अंतर्गत क्या होता है?

उत्तर : समेकित पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत रासायनिक उर्वरकों का हरी खाद, गोबर की खाद, केचुआ खाद, जीवाणु खाद आदि के साथ समन्वित उपयोग किया जाता है। समेकित पोघ्क तत्व प्रबंधन से भूमि की संरचना में सुधार होता है, नमी संरक्षित होती है और भूमि की उर्वरा शक्ति में बढोतरी के साथ साथ उत्पादन भी बढता है। फसल में खाद की मात्रा निर्धारित करने से पहले मृदा परीक्षण कराना आवश्यक है।

हरी खाद में ढैंचा या सनई को वर्षा शुरू होते ही बोना चाहिए व 45–50 दिन बाद फूल आने से पहले जमीन में दबा देना चाहिये। इससे औसतन 30–40 किलोग्राम /हैक्टेयऱ नत्रजन मिल जाती है। इसके अतिरिक्त लोबिया, ग्वार, उर्द या मूँग की फसल सरसों से पहले लेने पर सरसों की अच्छी उपज प्राप्त होती है। इन फसलों के बाद नत्रजन की दर में 40 किलोग्राम /हैक्टेयऱ तक की कमी भी की जा सकती है।

डॉ.अशोक कुमार शर्मा
वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर,

गोबर की खाद से प्रमुख तत्वों के साथ–साथ सूक्ष्म पोघ्क तत्व भी उपलब्ध होते है। सिंचित क्षेत्रों के लिये 2.5–3.0 टन प्रति हैक्टेयर तथा असिंचित क्षेत्र में 1–2 टन प्रति हैक्टेयर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद बुवाई के करीब एक माह पूर्व खेत में डालकर जुताई से अच्छी तरह मिला दें।

गोबर की खाद 2.5–3.0 टन प्रति हैक्टेयऱ के हिसाब से बुवाई से एक महीने पहले मिट्टी में मिलाने से हम 25 प्रतिशत अनुमोदित उर्वरक दर को कम कर सकते है। जैसा की आप जानते हैं की गोबर की खाद का अभाव होने से इसका प्रयोग बहुत कम हो गया है। इस परिस्थिति में हमें केंचुआ की खाद पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। केंचुआ की खाद में गोबर की खाद से 5 गुना नत्रजन, 6 गुना फास्फोरस व 11 गुना पोटाश अधिक होती है। इसकी मात्रा गोबर की खाद की मात्रा से आधी डालनी चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस तरह हम विभिन्न व्यंजनों का इस्तेमाल करने पर खाना खाने में संतुष्टि मिलती है, उसी प्रकार पौधों को भी एक अच्छे स्वस्थ जीवन काल के लिये विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिससे वह तो स्वस्थ रहते ही हैं साथ–साथ जो लोग उसे प्रयोग में लाते हैं वह भी स्वस्थ और परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

गुलाबी नगर की आबोहवा में फलने–फूलने को तैयार है स्ट्रॉबेरी

डॉ. स्वरूप सिंह राजस्थान एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट दुर्गापुरा के डायरेक्टर

वो दिन ढल गए, जब स्ट्रॉबेरी की फसल को ठंडे प्रदेशों के नाम से ही जाना जाता था । अब स्ट्रॉबेरी राजस्थान की मिट्टी और गर्म आबोहवा में फलने–फूलने को तैयार है । इसमें स्वीट चार्ले स्ट्रॉबेरी, गोमा प्रियंका जामुन, गोमा प्रियंका इमली जैसे फ्रूट्स और कई प्रकार के मेडिसिन प्लांट भी हैं, जो अब तक दूसरे प्रदेशों से ही जयपुर तक पहुचंते थे । अब अच्छी क्वालटी के पौधे व सीडस जयपुर में ही आसानी से उपलब्ध हो जायेगे । ये सब सम्भव होगा टिश्यू कल्चर टेक्निक, 30 माइक्रो शीट, ड्रिप सिस्टम के साथ ।

राजस्थान एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट दुर्गापुरा के डायरेक्टर डॉ. स्वरूप सिंह के अनुसार इंस्टीट्यूट दुर्गापुरा में कई प्रकार के प्लांट्स और अच्छे क्वालिटी के सीड्स की भरमार है, जिनको खरीदने के लिए पहले राजस्थान से बाहर का रूख करना पड़ता था, लेकिन अब रिसर्च इंस्टीट्यूट ने ठंडे प्रदेशों की से रखा जाता है। एक बार पौधें के पार्ट और माध्यम समूह का मानकीकरण होने के बाद उस उपयुक्त तापमान तथा रोशनी से लैब में उगाया जाता है । वहीं तमाम प्रकियाओ से गुजरने के बाद अगर टिश्यू कल्चर टेक्निक सफल हो जाती है तो टिश्यू टेक्निक के द्वारा राजस्थान की जलवायु मे ही लगाई गई स्ट्राबेरी का लुत्फ उठाने का मौका मिलेगा ।

पशु ,मत्स्य ,दूध क्षेत्र के कार्यकर्ता – मधुकर चव्हाण

राज्य मंत्री मंडल में मधुकर चव्हाण को पशु ,मत्स्य विभाग मंत्री पद पर है! , किसानों के साथ साथ पशुओं का महत्व खेती में भी बहुत है । पशु पक्षी खेती का एक हिस्सा है मधुकर चव्हाण के पशु पक्षी प्रेम को देखते हुए उन्हें यह कार्य दिया गया

*. मधुकर ने २०१३-२०१४ में दूध देने वाले छह जानवर हर गावों के गरीब किसानों को दिए . डजिस जिले में लोगों के पास काम नहीं था खेती के लिए जमीन उपलब्ध नहीं थी उन लोगों के लिए पशु पालन व्यवसाय शुरू किया ,इसीके साथ साथ उन्होंने पशुपालन के सब औजार उपलब्ध कराए

* मधुकर ने सुशिक्षित महिलाओं के लिए ' कुक्कट पालन योजनाये शुरू किए और महिलाओं को रोजगार दिलाया.

*उन्होंने हर गावों में बॉयलर जातो के कुक्कट पालन योजनाये शुरू करी

*. जिन गावों में दूध देने वाले जानवर ज्यादा मात्र है उस गावों में 'कामधेनु दत्तक ग्राम योजना शुरू कि ,इसके साथ साथ हर गावों में , जिलों में जानवरों के लिए दवाखाने स्थापित किए ।

*पशुओं को ज्यादा से ज्यादा खाद्य उपलब्ध हो ,इसलिए उन्होंने पशु शिक्षण संस्था शुरू किए और हर प्रकार से पशुऑन के संरक्षण पर ध्यान दिया ।

*.पशुधन विकास ले लिए जो अधिकारी सम्मानित किए गए है ,उन्हें ज्यादा प्रशिक्षण देकर

उन पर पशु विकास की ज़्यादा जिम्मेदारी सोपी

*. दूध उत्पादन में किसानो को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने सरकारी बैंक शुरू किए,हर बछड़े जन्म पर रुपये ४००/- किसानों को रुपये दिए गए ।

पशु पक्षी में विकास करते-करते उन्होंने मत्स्य व्यवसाय को भी बढ़ावा दिया ....

१. मत्स्य व्यवसाय के विकास के लिए उन्होंने हर किनारों पर बन्दर स्थापित किए

२.मत्स्य को जमा करके रखने के लिए उन्होंने कोल्ड स्टोरेज शुरू किए और मत्स्य व्यवसाय को अच्छे दाम मिलने के लिए हर क्षेत्र के बाजार उपलब्ध किए।

३. नगरपालिका और महानगरपालिका में बढे-बढे बाजार स्थापित किए और राज्यो में हर प्रकार से खेती का विकास हो ,और पशुधन का महत्व बड़े।

ममता म्हात्रे

कॉटन ९० लाख...

हद तक इस पर निर्भर करेगा कि चीन में आयात के लिए कैसी नीति अपनाई जाती है। रिपोर्ट में कहा गया ह कि अगर भारत सबसे सस्ती कॉटन सप्लायर के रूप में अपनी स्थिति बरकरार रख पाता है तो निर्यात मांग के अनुरूप बढ़ सकता है। पिछले तीन माह के दौरान भारत से ४९२,५६५ गांठ कॉटन का निर्यात हो चुका है। घरेलू मूल्य के बारे में यूएसडीए का कहना है कि कॉटन के दाम घटने लगे हैं क्योंकि मंडियों में इसका इजाफा होने लगा है.

बढ़ा रबर का...

पार्टियों का मुख्य आधार है। अक्टूबर के अंत तक चालू वित्त के पहले सात महीनों का आयात २,१४,४४८ टन पर पहुंच गया है, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में १,३१,१०७ टन था। इसमें ६४ फीसदी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वर्ष २०१२-१३ के दौरान कुल वार्षिक आयात २,१७,३६४ टन रहा था और आयात के वर्तमान रुझान को देखते हुए इस साल यह आंकड़ा ३,००,००० टन के पार निकलने की संभावना है। प्रमुख कारोबारियों के मुताबिक देश में कीमतें लगातार गिरने से स्थानीय और वैश्विक कीमतों के बीच अंतर घट गया है, जिससे अक्टूबर के दौरान आयात में वृद्धि की दर कम हुई है। अगस्त से सितंबर तक कीमतों में अंतर ३०-३५ रुपये प्रति किलोग्राम था। इस समय आरएसएस-४ ग्रेड की कीमत गिरकर १५६ रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गया है। उत्पादन में कमी जारी प्राकृतिक रबर का उत्पादन अक्टूबर में ७.३ फीसदी गिरकर ८३,००० टन रहा है, जो पिछले साल के इसी महीने में ८९,५०० टन था। रबर बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल और मई को छोड़कर इस वित्त वर्ष में उत्पादन गिरावट रही है। अप्रैल से अक्टूबर तक कुल उत्पादन १२.२ फीसदी गिरकर ४,२६,००० टन रहा है, जो पिछले साल की समान अवधि में ४,८५,२०० टन रहा था। यह लगभग तय है कि वित्त वर्ष २०१३-१४ में घरेलू वार्षिक उत्पादन में गिरावट दर्ज की जाएगी। रबर बोर्ड की चेयरमैन शीला थॉमस ने कहा कि इस वित्त वर्ष में कुल वार्षिक उत्पादन में ९.४ फीसदी गिरावट रहेगी। खपत भी हुई कम रबर बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार प्राकृतिक रबर की खपत में भी अक्टूबर के दौरान गिरावट रही। अक्टूबर में मासिक खपत ४ फीसदी गिरकर ८०,५०० टन रही, जो पिछले साल अक्टूबर में ८३,४८५ टन थी। अप्रैल से अक्टूबर के दौरान कुल खपत ३ फीसदी गिरकर ५,६९,५१५ टन रही। चालू वित्त वर्ष में अप्रैल को छोड़कर सभी महीनों के दौरान खपत में गिरावट दर्ज की गई है। अप्रैल में खपत मामूली बढ़ी थी

बनावटी हैं प्याज...

कि ऐसा जानबूझकर किया जा रहा है प्याज के दाम पिछले महीने १०० रुपये प्रति किलो को छू चुके हैं। अभी भी यह ६० से ७५ रुपये के बीच चल रहे हैं। वहीं, टमाटर की कीमत ८० रुपये प्रति किलो पर पहुंचकर उपभोक्ताओं के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि देश के दूसरे हिस्सों से अलग दिल्ली में सब्जियों की कीमतें अजीबो-गरीब तरीके से चढ़ रही हैं। उत्पादन अच्छा है फिर ऐसा होने की कोई वजह समझ नहीं आती। मुझे लगता है कि यहां लोग ही दाम बढ़ा रहे हैं।

टमाटर, आलू, प्याज और हरी सब्जियों की ऊंची कीमतों से उपभोक्ताओं को अगले आठ-दस दिनों में राहत मिल जायेगी। पंजाब और हिमाचल से नए आलू की आवक बढनी शुरू हो गई है जबकि रतलाम, हल्द्वानी और महाराष्ट्र से टमाटर की आवक अगले सप्ताह तक बढ़ जायेगी। राजस्थान से प्याज और दिल्ली के पड़ोसी राज्यों से हरी सब्जियों की आवकों में बढ़ोतरी होने की संभावना है आजादपुर मंडी में आलू की आवक बढ़कर करीब २०० गाडि?ों की हुई जिससे थोक कीमतों में करीब दो से तीन रुपये प्रति किलो की गिरावट दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि पंजाब और हिमाचल से नए आलू की आवक बढनी शुरू हो गई है

स्थिर हो रही है खाद्य कीमतें :

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने कहा है कि दुनियाभर में खाद्य कीमतें तेजी से बढ़ने के बाद अब स्थिरता आ रही है। आपूर्ति बढ़ने के कारण दुनियाभर में तेजी से खाद्य कीमतें घटेंगी।

महिन्द्रा-एक सशक्त पहचान

महिंद्रा कृषि उपकरण क्षेत्र के ट्रैक्टरों पिछले ३० वर्ष से भारतीय बाजार में न . १ में है ̆̆

कृषि-प्रौद्योगिकी समृद्धि के अपने नज़रिये के आधार पर महिंद्रा ने

कृषि समर्थन सेवाओं में भी विस्तार किया है, जिसमें महिन्द्रा ?प्रीट्रैक के तहत कृषि मशीनीकरण समाधान, महिन्द्रा शुभलाभ के जरिये बीज, फसल का संरक्षण, और बाजार से संबंध और वितरण और समृद्धि पहल के जरिये कृषि समर्थन सूचना और सलाह शामिल है

महिंद्रा का उद्देश्य ग्रामीण किसानों को सशक्त करना और ग्रामीण उत्पादकता, आय और जीवन स्तर सुधारना है. कठिन मेहनत आसान कर, उत्पादन बढ़ाकर और मूल्य में वृद्धि कर हम कृषकों का जीवनस्तर में सुधार लाना हैं. महिंद्रा के

कृषि उत्पाद और सेवाएं किसानों को समृद्ध बनाने के लिए एक समग्र समर्थन प्रणाली उपलब्ध कराती हैं. भारतीय कृषि विकास के साथ महिंद्रा का करीबी रिश्ते ने स्थानीय स्थितियों के उत्तर में कृषि उपकरण की परिकल्पना और निर्माण में सघन निपुणता प्रदान की है, और दुनिया के अन्य देशों के बाज़ार में प्रवेश में सक्षम बनाया. आज युनाइटेड स्टेट्स, चीन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, अफ्रीका (नाइज़ीरिया, माली, चाड, गैम्बिया, अंगोला, सूडान, घाना, मोरोक्को), लातीन अमेरिका (चिली, अर्जेंटीना, ब्राज़ील, वेनेज़ुएला, सेंट्रल अमेरिका और कैरिबियायी देश), दक्षिण एशिया (श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल), पश्चिमी एशिया (इरान, सीरिया) और पूर्वी यूरोप (सबिय्रा, टर्की,मैसेडोनिया). अहम स्थान है!

निर्यात मांग से बासमती धान में और तेजी संभव

नई दिल्ली, दस दिनों में पूसा ११२१ के दाम २५ फीसदी बढ़कर ३९००-४०० रुपये प्रति क्विंटल बासमती चावल में निर्यात मांग अच्छी होने से धान की कीमतों में तेजी बनी हुई है। उत्पादक मंडियों में पिछले दस दिनों में पूसा-११२१ बासमती धान की कीमतों में २० से २५ फीसदी की तेजी आकर भाव ३,९०० से ४,००० रुपये प्रति क्विंटल हो गए हैं। बासमती धान की कीमतें बढ़कर ३,७०० से ३,८०० रुपये प्रति क्विंटल हो गई। बासमती चावल का पुराना स्टॉक कम है जबकि निर्यात मांग अच्छी है, ऐसे में

आगामी दिनों में बासमती धान की मौजूदा कीमतों में और भी ८०० से १,००० रुपये प्रति क्विंटल की तेजी आने की संभावना है। हरियाणा की कैथल मंडी में बासमती धान की आवक बढ़कर एक लाख बोरी की हो गई है। एपीडा के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि चालू वित्त वर्ष २०१३-१४ के पहले पांच महीनों (अप्रैल से अगस्त) के दौरान बासमती चावल के निर्यात में १६.६ फीसदी की तेजी आकर कुल निर्यात १७.५० लाख टन का हो चुका है। पिछले साल की समान अवधि में इसका निर्यात १५ लाख टन का हुआ था। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार अप्रैल से अगस्त के दौरान मूल्य के लिहाज से बासमती चावल के निर्यात में १८.२४ फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल निर्यात १४,४५२.४७ करोड़ रुपये का हुआ है। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में १२,२२३.२२ करोड़ रुपये मूल्य का निर्यात हुआ था। श्री बालाजी राइस ट्रेडर्स के प्रबंधक विनय अग्रवाल ने बताया कि बासमती चावल की कीमतों में तेजी बनी हुई है। पूसा-१,१२१ बासमती चावल सेला का भाव बढ़कर बुधवार को ७,००० रुपये प्रति क्विंटल हो गया। पूसा नं. वन बासमती चावल का भाव बढ़कर १०,००० रुपये और डुप्लीकेट बासमती चावल का भाव बढ़कर ६,८०० रुपये प्रति क्विंटल हो गया। रमेश कुमार एंड कंपनी के प्रबंधक राजेश अग्रवाल ने बताया कि नरेला मंडी में बासमती धान की आवक बढ़कर एक लाख बोरी और नजफगढ़ मंडी में २५,००० बोरियों की हो गई है। मंडी में पूसा-१,१२१ बासमती धान का भाव बढ़कर ३,९०० रुपये और डुप्लीकेट बासमती का भाव बढ़कर ३,८०० रुपये प्रति क्विंटल हो गया

चालू वित्त वर्ष २०१३-१४ के पहले पांच महीनों (अप्रैल से अगस्त) के दौरान बासमती चावल का निर्यात मात्रा के हिसाब से १६.६ फीसदी और मूल्य के हिसाब से १८.२४ फीसदी तक बढ़ चुका है। खुरानिया एग्रो के प्रबंधक रामविलास खुरानिया ने बताया कि बासमती चावल में निर्यात मांग अच्छी बनी हुई है, जिससे धान के भाव बढ़ रहे हैं। पिछले दस दिनों में पूसा-१,१२१ बासमती धान की कीमतों में ८०० रुपये की तेजी आकर भाव ३,९००-४,००० रुपये प्रति क्विंटल हो गए हैं। बासमती नं. वन धान की कीमतें बढ़कर ५,५०० रुपये और डुप्लीकेट

साक्षात्कार

ऑर्गेनिक फूड है स्वस्थ जीवन का राज

मोरारका ऑर्गेनिक फूड्स लि. के निदेशक श्री मुकेश गुप्ता से बातचीत के अंश ..

सवाल : ऑर्गेनिक फूड की विशेषता क्या है और यह हेल्थी कैसे है ?

जवाब : लोग स्वस्थ और हाईजीनिक खाना खाने के बजाए पेट भरने के उदेश्य से खाना खाते हैं। भोजन के प्रति अनदेखी से लोगों के स्वास्थ में लगातार गिरावट दर्ज॰ की जा रही है। लोग जरा देर भी रूककर यह सोचते हैं कि जो खाद्य उत्पाद उनकी रसोई तक पहुँच रहे हैं, उनकी खेती कहाँ और किस वातावरण में हो रही है। आज गेहूं से लेकर दालों तक और सब्जियों से लेकर फलों तक, सब की पैदावार बढाने के लिए धडल्ले से रासायनिक खादों का इस्तेमाल बढ़ रहा है। फसलों पर हो रहा रसायनों का यह प्रयोग हमारे भोजन के जरिये जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। आज हम यह महसूस भी नहीं कर पाते कि फसलों पर उपयोग में लाये जा रहे यह कीटनाशक, उर्वरक और रसायन हमें लगातार हानि पहुंचा रहे हैं। इस समस्या के हल के रूप में जैविक खेती विकल्प बनकर सामने आने लगी है। इसके तहत परंपरागत खेती के तरीकों को अपनाते हुए बिना किसी रसायन आदि का प्रयोग किये हुए भोजन के पोषक मूल्यों को बनाये रखा जाता है। ऐसे में अच्छी सेहत के लिए ऑर्गेनिक फूड एक अच्छा विकल्प है।

सवाल : आमतौर पर मिलावटी खाद्य उत्पादों के सेवन से किस तरह की बीमारियाँ हो सकती है ?

जवाब : कीड़ों से बचाने के लिए और फसल तैयार होने तक कई बार कीटनाशक दवाओं का प्रयोग होता है। नतीजा हर दूसरा शख्स हमें किसी न किसी तरह की बीमारी से परेशान दिखाई देता है। पेट दर्द, अपच, कमजोरी और थकान तो खैर तनाव भरी जिंदगी में आम बात हो चुकी है लेकिन दिल का दौरा, कैंसर, मधुमेह और तमाम दूसरी बीमारियाँ भी हमारे खान-पान के बदलते तरीकों और खाद्य उत्पादों में शामिल प्रदूषण से जुडी हुई है।

सवाल : मोरारका ऑर्गेनिक फूड्स लि. ग्राहकों के लिए ऑर्गेनिक उत्पादों की कितनी बड़ी रेंज उपलब्ध कराता है ?

जवाब : मोरारका ऑर्गेनिक फूड्स के सभी खाद्य उत्पाद 'डाउन टू अर्थ' ब्रांड नाम से बाज़ार में बेचे जाते हैं। डाउन टू अर्थ खाद्य पदार्थों की एक बड़ी रेंज उपलब्ध कराता है, जिसमे दालें, मसाले, आटा, गाय का देसी घी और अन्य किराने के सामान के आलावा रोस्टेड नमकीन, पास्ता, विभिन्न प्रकार की चटपटी और खट्टी-मीठी चटनियाँ, सूप्स आदि शामिल है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि मोरारका ऑर्गेनिक उत्पादों में भारतीय रसोई के किराने से सम्बंधित ९५ प्रतिशत से ज्यादा सामान उपलब्ध है।

सवाल : ऑर्गेनिक उत्पादों की गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित की जा सकती है ? क्या इसका कोई प्रमाणीकरण भी होता है ?

जवाब : डाउन टू अर्थ के सभी उत्पाद विभिन्न प्रकार के कठोरतम गुणवत्ता जांचों से होकर गुजरते हैं, तथा विश्व स्तरीय सर्टिफिकेशन एजेंसियों द्वारा प्रमाणित किये गए हैं। डाउन टू अर्थ पहली ऐसी ऑर्गेनिक उत्पादों की श्रंखला है जहाँ प्रत्येक उत्पाद को अमेरिका और यूरोप के मानकों अनुसार रखा और १०० प्रतिशत जैविक होने की प्रमाणिकता के साथ बेचा जाता है। ऑर्गेनिक फ़ूड जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने का एक अच्छा प्रयास साबित हो सकता है। जहरीले रसायनों से यह पूरी तरह से प्रदुषण मुक्त है। इसे जिस तरीके से तैयार किया जाता है वह पूरी तरह से मिलावट रहित है। पूरी प्रमाणन प्रक्रिया वेल्यू चैन के हर स्तर पर अनिवार्य है, जैसे की खेती, खरीद, भण्डारण, प्रसंस्करण आदि पर बाहरी स्वतंत्र निरीक्षण और प्रमाणन एजेंसी द्वारा नज़र रखी जाती है। बाज़ार में लाने के लिए इसे कायदे से डिब्बाबंद करना और सील के साथ बेचे जाने की जरूरत होती है ताकि गुणवत्ता की गारंटी बनी रहे। किसी अन्य खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता को इतनी ज्यादा कसौटियों पर नहीं कसा जाता जितना की ऑर्गेनिक फ़ूड के मामले में होता है।

सवाल : आपकी कम्पनी का मूलमंत्र क्या है ?

जवाब : Sowing the seeds of harmony in life यानी इसका हिंदी अनुवाद करे तो हम कह सकते हैं कि जीवन में सद्भभाव का बीज बोना ...

सवाल : क्या आपके उत्पाद ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं ?

जवाब : जी हाँ, अब आप घर बैठे 'डाउन टू अर्थ' के ऑर्गेनिक उत्पादों को खरीद सकते हैं। इसके लिए www.downtoearthorganic.com पर लॉगऑन करें और घर बैठे 'डाउन टू अर्थ' ऑर्गेनिक उत्पादों की विशाल रेंज का आनंद उठाइए।

।................. सृष्टि एग्रो संवादाता

एथेनॉल निविदा के लिए सुस्त प्रतिक्रिया

नई दिल्ली. पहली निविदा के ऑर्डरों को अंतिम रूप देने में हुए विलंब की वजह से चीनी मिलों ने तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) द्वारा तीन महीने पहले जारी की गई दूसरी एथेनॉल खरीद निविदा को लेकर धीमी प्रतिक्रिया दिखाई है। पिछले साल के अंत में पेट्रोल के साथ ५ फीसदी एथेनॉल मिश्रण को अनिवार्य बनाए जाने के लिए कैबिनेट की मंजूरी के तहत ओएमसी ने चालू वित्त वर्ष में १०५ करोड़ लीटर ईंधन की जरूरत के लिए पहली निविदा जारी की थी। लेकिन पेराई सत्र में सुस्ती की वजह से चीनी मिलों ने पहली निविदा के संदर्भ में सिर्फ ५५ करोड़ लीटर की आपूर्ति की पेशकश की। पहली निविदा के लिए आपूर्ति अंतर को पाटने की कोशिश में ओएमसी ने दिसंबर २०१३ और नवंबर २०१४ के बीच १३३.५ करोड़ लीटर एथेनॉल खरीदने के लिए जुलाई में दूसरी निविदा जारी की थी। इसकी प्रतिक्रिया में चीनी मिलों ने महज ६२ करोड़ लीटर की आपूर्ति की पेशकश की जो निविदा में निर्धारित मात्रा का लगभग ४६ फीसदी है। एथेनॉल आपूर्ति में कमी को चिंताजनक माना जा रहा है, क्योंकि चीनी मिलों ने इस साल स्वच्छ ईंधन की पर्याप्त आपूर्ति का दावा किया था और तेल कंपनियां भी इसके लिए ऊंची कीमत चुकाने पर सहमत हो गई थीं। इस उद्योग के एक सूत्र ने आपूर्ति को लेकर धीमी प्रतिक्रिया की पुष्टि करते हुए कहा कि ओएमसी द्वारा निर्धारित कीमतें भी कम हैं। हालांकि उत्तर प्रदेश में ओएमसी के लिए एथेनॉल आपूर्ति की एक्स-मिल कीमत ३६ रुपये प्रति लीटर पर तय की गई थी, जबकि महाराष्ट्र और कर्नाटक में इसे ३९-४० रुपये प्रति लीटर निर्धारित किया गया। पेट्रोल पम्पों पर हालांकि एथेनॉल

कीमत ७ रुपये प्रति लीटर तक बढ़ी, लेकिन ओएमसी को अभी भी ७-८ रुपये प्रति लीटर का मुनाफा हो रहा है। इस उद्योग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'चीनी मिलों ने लगभग सात महीने के विलंब की वजह से असहजता महसूस की है। इस विलंब ने इस उद्योग को इतनी लंबी अवधि तक अनिश्चितता के घेरे में ला दिया। इसके अलावा पूरी पूंजी भी फंसी हुई थी जिस पर उद्योग को बैंकों के लिए लगातार ब्याज चुकाना पड़ रहा था।ऽ तेल विपणन कंपनियों ने अधिक कीमत की वजह से पहली निविदा में चीनी मिलों के १५ करोड़ लीटर एथेनॉल के ऑफर को ठुकरा दिया था। जुलाई में ४० करोड़ लीटर के ऑर्डरों के बावजूद तेल कंपनियां अक्टूबर के पहले पखवाड़े तक मुश्किल से ८ करोड़ लीटर की खरीदारी में सफल रही हैं।

नेचुरल रबर के आयात में कमी संभव

दिल्ली . लेकिन घरेलू सप्लाई बेहतर होने से मूल्य में बढ़ोतरी के आसार नहीं विदेशी बाजार और घरेलू बाजार में नेचुरल रबर की कीमतों में अंतर घटकर १ से ५ रुपये प्रति किलो का रह गया है जिससे आयात पड़ते नहीं लग रहे हैं। इन कीमतों पर नए आयात सौदे नहीं हो पाएंगे, लेकिन घरेलू बाजार में उपलब्धता ज्यादा है इसलिए घरेलू बाजार में नेचुरल रबर की मौजूदा कीमतों में तेजी की संभावना नहीं है। रबर मर्चेंट्स एसोसिएशन के सचिव अशोक खुराना ने बताया कि कोट्टायम में नेचुरल रबर का भाव घटकर १५१-१५८ रुपये प्रति किलो रह गए जबकि बैंकॉक में इसका भाव १५२-१५३ रुपये प्रति किलो (भारतीय मुद्रा में) है। विदेशी और घरेलू बाजार में कीमतों में अंतर कम होने से नए आयात सौदे नहीं होंगे। लेकिन टायर कंपनियों के पास नेचुरल रबर का स्टॉक ज्यादा है, जिससे मौजूदा कीमतों में तेजी की संभावना नहीं है। हालांकि घरेलू बाजार में कीमतों में आई भारी गिरावट से मझोले उद्योगों को जरूर फायदा हुआ है। विनको ऑटो इंडस्ट्रीज लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर एम एल गुप्ता ने बताया कि अप्रैल से अगस्त के दौरान विदेशी बाजार में नेचुरल रबर के भाव घरेलू बाजार से काफी कम थे, जिससे बड़ी खपत वाली कंपनियों ने आयात ज्यादा मात्रा में किया। इसीलिए अप्रैल से अक्टूबर के दौरान नेचुरल रबर का आयात बढ़कर २,१४,४४८ टन का हुआ है जबकि पिछले साल की समान अवधि में १,३१,१०७ टन का हुआ था। नेचुरल रबर की कुल खपत में ६० से ६५ फीसदी की हिस्सेदारी बड़ी कंपनियों की है तथा एसएमई कंपनियों की खपत ३५ से ४० फीसदी ही है जबकि इस समय केवल एसएमई कंपनियां ही खरीद कर रही हैं।

सोयाबीन खाद्य तेल महंगे होने के आसार

नई दिल्ली सोयाबीन उत्पादन ५.७ फीसदी घटने का अनुमान तेजी की तपिश सोपा ने सोयाबीन उत्पादन घटकर १२२ लाख टन रहने का अनुमान लगाया रुपये के मुकाबले डॉलर फिर मजबूत होने से खाद्य तेल आयात महंगा पड़ेगा इसका असर घरेलू बाजार में खाद्य तेलों की कीमतों पर दिखाई देने लगा बंदरगाह पहुंच क्रूड पाम तेल बढ़कर ८८० डॉलर प्रति टन हो गया विदेशी बाजार में पिछले एक माह के दौरान खाद्य तेलों के दाम १०ऽ बढ़े सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सोपा) ने सोयाबीन के पहले उत्पादन अनुमान में ५.७ फीसदी की कटौती कर दी है। ब्याह-शादियों के साथ ही त्योहारी मांग से खाद्य तेलों की मांग में बढ़ोतरी हुई है। महीने भर में विदेशी बाजार में खाद्य तेलों की कीमतों में करीब १० फीसदी की तेजी आई है। ऐसे में आगामी दिनों में घरेलू बाजार में खाद्य तेलों की कीमतों में २५० से ३०० रुपये प्रति क्विंटल की और तेजी आने की संभावना है। साई सिमरन फूड्स लिमिटेड के डायरेक्टर नरेश गोयनका ने बताया कि सोपा ने सोयाबीन के उत्पादन अनुमान को १२९.८३ लाख टन से घटाकर १२२.३४ लाख टन कर दिया है। क्विंटल की तेजी आ चुकी है। इंदौर में रिफाइंड सोयाबीन तेल की कीमतें बढ़कर को ७५०-७५५ रुपये, हरियाणा में बिनौला तेल का भाव ६६० रुपये, सरसों तेल का ६४७ रुपये, राजकोट में मूंगफली तेल का भाव ८४०-८५० रुपये, बंदरगाह पर क्रूड पाम तेल का भाव ५६०-५६५ रुपये और आरबीडी पामोलीन का भाव ६०० रुपये प्रति दस किलो हो गया। खाद्य तेलों की खपत का सीजन शुरू होने से मौजूदा कीमतों में और भी २५०-३०० रुपये प्रति क्विंटल की तेजी आने की संभावना है। सॉल्वेंट एक्सट्रेक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के अनुसार सितंबर महीने में खाद्य तेलों के आयात में १३ फीसदी की कमी आकर कुल आयात ८.६३ लाख टन का हुआ है जबकि पिछले साल की समान अवधि में ९.९३ लाख टन का हुआ था। क्रूड पाम तेल का भाव बंदरगाह पहुंच गुरुवार को बढ़कर ८८० डॉलर और आरबीडी पामोलीन का भाव भी ८८० डॉलर प्रति टन हो गया। सितंबर महीने में इनका भाव क्रमशः ८०० डॉलर और ८१० डॉलर प्रति टन था। एग्री विशेषज्ञ अभय लाखवान ने बताया कि मलेशिया में मौसम प्रतिकूल बना हुआ है जबकि खाद्य तेलों में चीन की मांग पहले की तुलना में बढ़ी है। ऐसे में विदेशी बाजार में भी खाद्य तेलों के दाम बढने की संभावना है

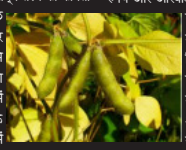

अच्छे बीज का महत्व एवं गुण

गंगाराम
विद्या वाचस्पति छात्र,
पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग
एस.के.एन. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर

आधुनिक खेती में उन्नत एवं संकर बीजों का स्थान सर्वोपरि है। चाहं कितनी ही अच्छी भूमि हो और कितने ही अच्छे फसल उत्पादन के प्रयत्न किया जाये। परन्तु अच्छे बीज के अभा में सभी व्यर्थ हो जाते है। आम तौर पर कृष्क अपने घर पर पैदा किये गये साधारण बीज या फिर नजदीक के बाजार से घटिया बीज खरीद कर बो देते है। जिसमें उनका खर्च तो अवश्य कम होता है। परन्तु उन्हें यह पता नहीं होता कि अच्छी खेती की नींव अच्छे बीज पर आधारित होती है। यदि यही खराब है तो फिर खेत की तैयारी, उर्वरक, पानी आदि पर लगाई गई लागत तथा परिश्रम बेकार है।

सस्य उत्पादत में बहुत से ऐसे कारक है जिनपर कृष्क आसानी से नियंत्रण नहीं कर सकता जैसे सूर्य के प्रकाश की अवधि तापमान, वर्षा आदि परन्तु जो कारक उसके अधिकार में है उनमें से उसके लिए इससे महत्वपूर्ण तथा सरल और कोई बात नही हो सकती है कि वह अच्छा बीज प्रयोग में लाये। इस अकेले कारक से इसकी उपज में 60–80 प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। सस्ते बीज खरीदकर धन बचाने की आदत कमजोर अर्थव्यवस्था की धोतक है। अतः वर्ष भर खेती की सफलता बीज के कुशल और सहज चुनाव पर निर्भर करती है। इसी बात को ध्यान में रखकर अच्छे बीज के गुण तथा उसकी जांच कैसे करें इस पर संक्षिप्त टिप्पणी दी जा रही है।

1.बीज अनुवांशिक तथा प्रजातिय रूप से घ्द्ध होना चाहिए। उसकी जांच आसानी से नही होती। अतः बीज की विश्वसनीय विक्रेता या एजेन्सी से खरीदना चाहिए।

2.बीज की भौतिक रूप से घ्द्ध होना चाहिए। यानि बीज में दूसरी फसल या खरपतवारों के बीज नहीं होना चाहिए। यह घ्द्धता 95–98 प्रतिशत तक अवश्य होनी चाहिए।

3.बीज का आकार रंग तथा आकृति समान होनी चाहिए। देखकर जांच कर लें।

4.बीज पूरी तरह से परिपक्व होना चाहिए।

5.बीज सुडौल होना चाहिए। बीज किसी भी प्रकार से कटे या क्षतिग्रस्त नही होने चाहिए।

6.सभी प्रकार के बीजों की आयु अलग–अलग होती है। अतः सभी किस्मों के बीजों की जमाव अवधि अलग–अलग होती है। जैसे प्याज का बीज एक सेम, गाजर व भिण्डी के बीज दो वर्ष मूली, चुकन्दर, मटर, खीरा वर्गीय सब्जी के बीज 3 वर्ष या गोभी, वर्गीय फसले, टमाटर, बैंगन, पालक, खरबूजा आदि के बीजों की आयु 4 वर्ष तक होती है।

7.अधिकतर उन्नत व संकर बीजों को ही खरीदना चाहिए।

गंगाराम
विद्या वाचस्पति छात्र,
पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग
एस.के.एन. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर

कैसे करें तोरई का संकर बीज उत्पादन

शशि कुमार बैरवा, डॉ. बी.आर. चौधरी, डॉं. अनिल कुमार सोनी एवं सुरेश कुमार्रे

तोरई एक बेलवाली फसल है, जो जायद तथा खरीफ ऋतु में सफलतापूर्वक देश के कई स्थानों में लगायी जाती है। नर व मादा पुष्प एक ही बेल पर अलग-अलग स्थान पर तथा अलग-अलग समय पर खिलते हैं। नर पुष्प पहले तथा गुच्छों में लगते हैं जबकि मादा पुष्प बेल की पार्श्व शाखाओं पर व अकेले लगते हैं। पुष्प का रंग चमकीला चमकीला पीला एवं आकर्षक होता है। मादा पुष्प के निचले भाग में फल की आकृतियुक्त अण्डाशय होता है जो निषेचन के पश्चात फल का निर्माण करता है। पुष्प सांयकाल में ५ से ८ बजे के दौरान खिलते हैं। पुष्पन के दौरान नर पुष्पों से जीवित व सक्रिय परागकण प्राप्त होते हैं, साथ ही मादा पुष्पों की वर्तिकाग्र निषेचन के लिए अत्यधिक सक्रिय होती है। तुरई मे पर-परागण द्वारा निषेचन होता है जो मुख्यत: मधुमक्खियों द्वारा सम्पन्न होता है।

तोरई की बेल

नर पुष्प मादा पुष्प

खेत का चुनाव:

संकर बीज उत्पादन के लिए फसल बोने से पूर्व पिछले वर्ष खेत में उगाई गई फसलों की जानकारी पहले से कर लेनी चाहिए। खेत का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पूर्व में उस खेत में तोरई की फसल नहीं ली गई हो, क्योकि पिछली फसल का बीज खेत में गिर जाता है तथा यह बीज संकर बीज उत्पादन के लिए प्रयुक्त प्रजनकों के बीज के साथ उगकर मादा प्रजनक से पर-परागण करके संकर बीज को दूषित कर देते हैं। मृदा उचित जल निकासयुक्त, जीवांशयुक्त, बलुई दोमट या बलुई होनी चाहिए, जिसका पी.एच. मान ६.५ से ७.० के मध्य का होना चाहिए।

मौसम का चुनाव:

तोरई के संकर बीज उत्पादन के लिए जायद मौसम की अपेक्षा, खरीफ मौसम अधिक उपयुक्त होता है। खरीफ मौसम में बेलों की वृद्धि, पुष्पन तथा फलन अधिक होता है।खरीफ में बीज की गुणवत्ता व फलत भी अधिक प्राप्त होती है ।

बीज का स्त्रोत:

संकर बीज उत्पादन के लिए दो पैतृक प्रजनको (नर व मादा) के आधारीय बीजों की जरूरत होती है। अत: पैतृक प्रजनको का बीज हमेशा विश्वशनीय संस्थानों जैसे कृषि विश्वविद्यालयों, राज्य एवं केन्द्रीय अनुसंधान संस्थानों आदि से ही प्राप्त करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक:

खाद एवं उर्वरक की मात्रा मृदा की उर्वरता पर निर्भर करती है। खेत की अन्तिम जुताई के समय २५ से ३० टन सड़ी-गली गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना चाहिए। नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश की मात्रा क्रमश: ८०:६०:६० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर मिलानी चाहिए। नत्रजन की एक तिहाई तथा फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा अन्तिम जुताई के समय देनी चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा को दो समान भागों में बांटकर बुवाई के २५ से ३० तथा ४५ से ५० दिनों के बाद खड़ी फसल में देना चाहिए।

पृथक्करण दूरी:

बीज की आनुवांशिक शुद्धता बनाये रखने के लिए पृथक्करण दूरी बनाये रखना अत्यन्त आवश्यक होता है। अत: इसके लिए संकर बीज वाली फसल को, तुरई की अन्य प्रजातियों तथा चिकनी तुरई आदि से कम से कम ८००-१००० मीटर की पृथक्करण दूरी पर बोना चाहिए।

बीज की मात्रा:

नर व मादा प्रजनकों के लिए बीज की मात्रा अलग-अलग ली जाती हैं। मादा प्रजनक के लिए लगभग १.७५ से २.०० किलोग्राम एवं नर प्रजनक के लिए लगभग ०.५० किलोग्राम बीज की मात्रा प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है।

बीज उपचार एवं बुवाई:

बुवाई करने से पूर्व बीज को थाइरम नामक फफुदनाशी (२ ग्राम दवा प्रति किग्रा. बीज) से उपचारित करना चाहिए। शीघ्र अंकुरण के लिए बीजों को २० से २४ घंटे तक पानी में भिगोना चाहिए तथा इसके पश्चात् टाट की बोरी के टुकडें में लपेट कर किसी गर्म जगह पर रखना लाभप्रद होता है। बीज की बुवाई नालियों में करनी चाहिए। नाली से नाली के बीच ३ मीटर तथा थाले से थाले के मध्य ८० सेमी. दूरी रखनी चाहिए। नालियाँ ५० सेमी. चौडी व ३५ से ४५ सेमी. गहरी बनी होनी चाहिए।

नर एवं मादा पौधों का अनुपात:

तुरई में संकर बीज उत्पादन के लिए नर व मादा प्रजनकों को एक निश्चित अनुपात (नर : मादा : १ : ३) के अनुपात में खेत में बनी नालियों में बुवाई करनी चाहिए। खेत में प्रथम पंक्ति तथा अन्तिम पंक्ति में नर पैतृक जनकों की बुवाई करे जिससे कि पर-परागण के दौरान बीज की आनुवांशिक शुद्धता बनी रहती है।

संकर बीज उत्पादन की विधि:

तुरई में प्राकृतिक रूप से पर-परागण कीट पतंगों के माध्यम से होता है अत: संकर बीज उत्पादन की मुख्यत: दो विधियाँ अपनायी जाती है।

१. हाथ द्वारा कृत्रिम निषेचन करके: यह विधि पर्याप्त प्रथक्करण दूरी उपलब्ध न होने की दशा में अपनाई जाती है। इस विधि में मादा प्रजनक पर लगे पुष्पों को पुष्पन के एक दिन पहले बटर पेपर से बनी थैली से ढक देते है। इस थैली में ४-५ बारीक छिद्र हवा के आगमन के लिए करना आवश्यक है। अगले दिन साँयकाल ४ से ८ बजे के मध्य नर पुष्पों से परागकण एकत्रित करके महिन ब्रूश की सहायता से बटर पेपर थैलों से ढके मादा पुष्पों की वर्तिकाग्र पर परागकणों को स्थानान्तरित कर पुन: बटर पेपर से ढक देते है। ३ से ४ दिनों के पश्चात् जब निषेचित मादा पुष्पों में फलन आरम्भ हो जाता है तो फल की पर्याप्त वृद्धि के लिए उन पर लगी थैलियों को सावधानीपूर्वक हटा देना आवश्यक है। अधिक गुणवत्ता बीज प्राप्त करने के लिए प्रत्येक बेल से ४ से ५ फल ही प्राप्त करना चाहिए इससे अधिक फल लेने पर बीजों के विकास एवं गुणवत्ता में कमी आती है।

नर पुष्प पर उपस्थित परागकण

हाथ द्वारा पर-परागण

परागित पुष्प को ढकना

२. खुला परागण द्वारा निषेचन (मादा प्रजनक के नर फूलों को हटाना तथा मधुमक्खियों द्वारा परागण): इस विधि का उपयोग पर्याप्त पृथक्करण दूरी (८०० से १००० मीटर) उपलब्ध होने की दशा में चुना जाता है। मादा प्रजनकों पर लगे नर पुष्पों की पुष्पकलिकाओं को खलने से पहले ही तोड़ दिया जाता है इसके लिये खेत में पुष्पकलियों के खिलने से पहले खेत का लगातार निरीक्षण करना आवश्यक है। पर-परागण के लिए प्रति एकड़ एक मधुमक्खी का छत्ता पर्याप्त होता है।

अवांछनीय पौधों का निष्कासन:

संकर बीज उत्पादन में यह एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें पैतृक प्रजनको की आनुवांशिक तथा भौतिक शुद्धता बनी रहती है। खेत में पैतृक प्रजनको के अलावा तोरई की अन्य किस्मों के पौधों तथा चिकनी तोरई के पौधों को फूल आने से पूर्व अवश्य निकाल देना चाहिए। पैतृक प्रजनकों के आनुवांशिक गुणों का बीज उत्पादक को ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

फसल का निरीक्षण निम्नलिखित तीन अवस्थाओं में करके अवांछनीय पौधों को निकाल देना चाहिए।

- फूल आने से पूर्व पौधे के बाहय गुणों के आधार पर जैसे पत्तों का रंग, आकार, बेल की वृद्धि इत्यादि।
- फूल आने के समय फूलों के गुणों के आधार पर जैसे फूलों का रंग, आकार एवं प्रकार आदि।
- फल की तुडाई से पूर्व, फल वृद्धि तथा तुड़ाई के समय फलों की गुणवता के आधार पर।

तुड़ाई एवं बीज निष्कासन:

मादा प्रजनक के फलों का रंग भूरा होकर फलों के तथा फल सुखने के पश्चात् इनको बेलों से तोड लिया जाता है। परिपक्व फलों को हिलाने पर फल में उपस्थित बीजों की आवाज आती है। परिपक्व फलों को ५ से १० दिनों तक छायादार स्थान पर रखकर सुखाया जाता है, ताकि फलो एवं बीजों में उपस्थित अतिरिक्त नमी निकल जायें। सूखे हुए फलो से बीज निकाल लेना चाहिए। परिपक्व बीज काले व चमकीले रंग के दिखाई देते है।

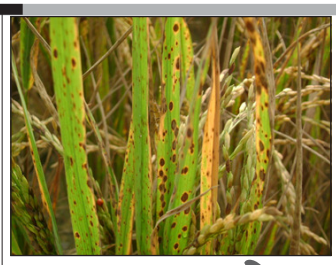

धान के प्रमुख रोग

१. भूरी चित्ती रोग/ पत्र लांछन (Brown Spot)

यह रोग देश के लगभग सभी हिस्सों मे फैली हुई है, खासकर पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु इत्यादि। भारत मे इस रोग पर पहली बार रिर्पोट चेन्नई के सुन्दरारमण (१९१९) द्वारा बनाई गई थी। उत्तर बिहार का यह प्रमुख रोग है। यह एक बीजजनित रोग है। यह रोग हेल्मिन्थो स्पोरियम औराइजी द्वारा होता है।

इस रोग मे धान की फसल को बिचड़ा से लेकर दानों तक को नुकसान पहुँचाता है। इस रोग के कारण पत्तियों पर गोलाकार भूरे रंग के धब्बें बन जाते है। यह रोग फफूँद जनित है। पौधों की बढ़वार कम होती है, दाने भी प्रभावित हो जाते है, जिससे उनकी अंकुरण क्षमता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। पत्तियों पर तिल के आकार के भूरे रंग के काले धब्बें बन जाते है। ये धब्बें आकार एवं माप मे बहुत छोटी बिंदी से लेकर गोल आकार का होता है। धब्बों के चारो ओर हल्की पीली आभा बनती है। पत्तियों पर ये पूरी तरह से बिखरे होते है। धब्बों के बीच का हिस्सा उजला या बैंगनी रंग की होती है। बड़े धब्बों के किनारे गहरे भूरे रंग के होते है, बीच का भाग पीलापन लिए, गेंदा सफेद या घूसर रंग का हो जाता है। उग्रावस्था मे पौधों के नीचे से ऊपर पत्तियों के अधिकांश भाग धब्बों से भर जाते है। ये धब्बें आपस मे मिलकर बड़े हो जाते है, और पत्तियों को सुखा देते है। आवरण पर काले धब्बे बनते है। इस रोग का प्रकोप उपराऊ धान मे कम उर्वरता वाले क्षेत्रों मे मई-सितम्बर माह के बीच अधिक दिखाई देते है। यह रोग ज्यादातर उन क्षेत्रों मे देखने को मिलता है, जहाँ किसान भाई खेतों मे उचित प्रबंधन की व्यवस्था नही कर पाते है। इसमे जड़ के अलावे पौधे के सभी रोगी हो सकते है। इस रोग मे दानों के छिलको पर भूरे से काले धब्बें बनते है, जिससे चावल बदरंग हो जाता है।

रोग नियंत्रण:-

१. बीजों को थीरम एवं कार्बेन्डाजिम (२:१) की उग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।
१.रोग सहनशी किस्मों जैसे- बाला, कृष्णा, कुसुमा, कावेरी, रासी, जगन्नाथ और आई आर ३६, ४२, आदि का व्यवहार करें।
२.रोग दिखाई देने पर मैन्कोजैव के ०.२५ प्रतिशत घोल के २-३ छिड़काव १०-१२ दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।
३.अनुशंसित नेत्रजन की मात्रा ही खेत मे डाले।
४.बीज को बेविस्टीन २ ग्राम या कैप्टान २.५ ग्राम नामक दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुआई से पहले उपचारित कर लेना चाहिए।
५.खड़ी फसल में इण्डोफिल एम-४५ की २.५ किलोग्राम मात्रा को १००० लीटर पानी मे घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव १५ दिनों के अन्तर पर करें।
६.रोगी पौधों के अवशेषों और घासों को नष्ट कर दें।
७.मिट्टी मे पोटाश, फास्फोरस, मैगनीज और चूने का व्यवहार उचित मात्रा मे करना चाहिए।

२. झोंका (ब्लास्ट) रोग/ प्रध्वंस (ट्टै)

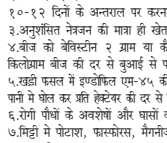

यह रोग पिरीकुलेरिया ओराइजी नामक कवक द्वारा फैलता है। धान का यह ब्लास्ट रोग अत्यंत विनाशकारी होता है। पत्तियों और उनके निचले भागों पर छोटे और नीले धब्बें बनते है, और बाद मे आकार मे बढ़कर ये धब्बें नाव की तरह हो जाते है। बिहार में मुख्यत: इस रोग का प्रकोप सुगंधित धान मे पाया जाता है। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों पर दिखाई देते है, लेकिन इसका आक्रमण पर्णच्छद, पशपक्रम, गांठो तथा दानों के छिलको पर भी होता है। मुख्यत: पत्ती ब्लास्ट, पर्वसंधि ब्लास्ट और गर्दन ब्लास्ट के रूप मे इस रोग को देखते है। यह फफूँदजनित है। फफूंद पौधे के पत्तियों, गांठो एवं बालियों के आधार को भी प्रभावित करता है। धब्बों के बीच का भाग राख के रंग का तथा किनारें कत्थई रंग के घेरे की तरह होते है, जो बढ़कर कई सेन्टीमीटर बड़ा हो जाता है। जब यह रोग उग्र होता है, तो बाली के आधार भी रोगग्रस्त हो जाते है, और बाली कमजोर होकर वही से टूट कर गिर जाती है। भूरे धब्बों के मध्य भाग मे सफेद रंग होता है। इस अवस्था मे अधिक क्षति होती है। गांठ का भूरा-काला होना एवं सड़न की स्थिति मे टूटना, दानों का खखड़ी होना एवं बाली के आधार पर फफूंद का सफेद जाल होना 'नेक राट' कहलाता है। क्षत स्थल के बीच का भाग घूसर रंग का हो जाता है। अनुकूल वातावरण मे कई क्षतस्थल बढ़कर आपस मे मिल जाते है, जिसके फलस्वरूप पत्तियां झूलसकर सूख जाती है। गाँठो पर भी भूरे रंग के धब्बें बनते है, जिससे समुचित पौधे को नुकसान पहुँचता है। तनो की गांठों पूर्णतया या उसका कुछ भाग काला पड़ जाता है, कल्लों की गांठो पर कवक के आक्रमण से भूरे धब्बें बनते है, जिससे गांठ के चारो ओर से घेर लेने से पौधे टूट जाते है। बालियों के निचले डंठल पर घूसर बादामी रंग के क्षतस्थल बनते है, जिसे 'ग्रीवा विगलन' कहते है। रोगी बालियों मे दाने नही बनते है, और बालियाँ सड़े भाग से टूट कर गिर जाती है। लीफ ब्लास्ट में पत्तियों पर राख के समान स्लेटी रंग का केन्द्रीय भाग एवं भूरे रंग के किनारों वाले बड़े शंक्वाकार अथवा आँखों की आकृति वाले धब्बें बनतें है।

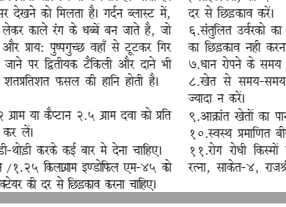

पुष्पन के समय पर्वसंधि ब्लास्ट मे पर्वसंधि वाला भाग काला हो जाता है, और उस स्थान से पौधा टूट जाता है। रोग की वजह से डंढल बालियों के भार से टूटने लगते है, क्योंकि निचला भाग ग्रीवा संक्रमण से कमजोर हो जाता है। जिससे धान की उपज पर काफी असर देखने को मिलता है। गर्दन ब्लास्ट में, पुष्पगुच्छ के आधार भाग पर भूरे से लेकर काले रंग के धब्बें बन जाते है, जो मिलकार चारो ओर से घेर लेते है, और प्राय: पुष्पगुच्छ वहाँ से टूटकर गिर जाता है। रोग का गंभीर प्रकोप पाये जाने पर द्वितीयक टैंकिली और दाने भी संक्रमित हो जाते है। परिणामस्वरूप शतप्रतिशत फसल की हानि होती है।

रोग नियंत्रण:-

१.बीज को बोने से पहले बेविस्टीन २ ग्राम या कैप्टान २.५ ग्राम दवा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर लें।
२.नेत्रजन उर्वरक उचित मात्रा मे थोड़ी-थोड़ी करके कई बार मे देना चाहिए।
३.खड़ी फसल मे २५० ग्राम बेविस्टीन /१.२५ किलाग्राम इण्डोफिल एम-४५ को १००० लीटर पानी मे घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
४.हिनोसान का छिड़काव भी किया जा सकता है। एक छिड़काव पौधशाला मे रोग देखते ही, तथा दो-तीन छिड़काव १०-१५ दिनों के अन्तर पर बालियाँ निकलने तक करना चाहिए।
५.बीम नामक दवा की ३०० मिली ग्राम मात्रा को १००० लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव किया जा सकता है।
६.रोग रोधी किस्मों जैसे- आई आर ३६, आई आर ६४, पंकज, जमुना, सरजु ५२, आकाशी और पंत धान १० आदि को उगाना चाहिए।

३. पर्णच्छंद अंगमारी/ सीथ/ बैण्डेड ब्लास्ट रोग/ आच्छंद झुलसा/ पर्ण झुलसा/ शीथ झुलसा/ आवरण झुलसा रोग (Sheath Blight)

धान आच्छद झुलसा जो अब तक साधारणतया एक रोग माना जाता है, भारत के धान विकसित क्षेत्रों मे यह एक प्रमुख रोग बनकर सामने आया है। इस रोग के कारक राइजोक्टोनिया सोलेनाई नामक फफूँदी है, जिसे हम थेनेटीफोरस कुकुमेरिस के नाम से भी जानते है। पानी की सतह से ठीक ऊपर पौधें के आवरण पर फफूँद अण्डाकार जैसा हरापन लिए हुए स्लेट/उजला धब्बा पैदा करती है। पत्तियों के आधार तथा पत्तियों पर बड़े-बड़े धारीदार हरे-भूरे या पुआल के रंग के रोगी स्थान बनते है। बाद मे ये तनो को चारो ओर से घेर लेते है, क्षतों का केन्द्रीय भाग स्लेटीपन लिए सफेद होता है, तथा किनारों पर रंग भूरा लाल होता है और ये क्षत धान के पौधों पर दौजियाँ बनते समय एवं पुष्पन अवस्था मे बनते है। इस रोग के लक्षण मुख्यत: पत्तियों एवं पर्णच्छद पर दिखाई पड़ते है। अनुकूल परिस्थितियों मे फफूँद छोटे-छोटे भूरे काले रंग के दाने पत्तियों की सतह पर पैदा करते है, जिन्हे स्कलेरोपियम कहते है। ये स्कलेरोपिया हल्का झटका लगने पर नीचे गिर जाता है। रोग की उग्रावस्था मे आवरण से ऊपर की पत्तियों पर भी लक्षण पैदा करती है। सभी पत्तियाँ आक्रांत हो जाती है। पौधा झुलसा हुआ प्रतीत होता है, और आवरण से बालियाँ बाहर नही निकल पाती है। बालियों के दाने भी बदरंग हो जाते है। वातावरण मे आर्द्रता अधिक तथा उचित तापक्रम रहने पर, कवक जाल तथा मसूर के दानों के तरह स्कलेरोशियम दिखाई पड़ते है। रोग के लक्षण कल्लें बनने की अंतिम अवस्था मे प्रकट होते है। लीफ शीथ पर जल सतह के ऊपर से धब्बे बनने शुरू होते है। पौधों मे इस रोग की वजह से उपज मे ५०ङ तक का नुकसान हो सकता है।

रोग नियंत्रण :-

१.जेकेस्टीन या बेविस्टीन २ किलोग्राम या इण्डोफिल एम-४५ की २.५ किलोग्राम मात्रा को १००० लीटर पानी मे घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
२.खड़ी फसल मे रोग के लक्षण दिखाई देते ही भेलीडा- माइसिन कार्बेन्डाजिम १ ग्राम या प्रोपीकोनालोल १ मि.ली. का १.५-२ मिली प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर १०-१५ दिन के अन्तराल पर २-३ छिड़काव करें।
३.धान के बीज को स्थूडोमोनारन फ्लोरेसेन्स की १ ग्राम अथवा ट्राइकोडर्मा ४ ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
४.घास तथा फसल अवशेषों को खेत मे जला देना चाहिए। गर्मी मे खेत की गहरी जुताई करें।
५.प्रारम्भ मे खेत मे रोग से आक्रांत एक भी पौधा नजर आते ही काट कर निकाल दें।
६.अधिक नेत्रजन एवं पोटाश का उपरिनिवेशन न करें।
७.रोगरोधी किस्में जैसे- पंकज, सवर्नधान और मानसरोवर आदि को उगावें।

४. जीवाणुज पत्ती अंगमारी रोग/ जीवाणुज पर्ण झुलसा रोग (Bacterial Leaf Blight)

जीवाणुज पर्ण झुलसा रोग लगभग पूरे विश्व के लिए एक परेशानी है। भारत मे मुख्यत: यह रोग धान विकसित प्रदेशों जैसे- पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, छत्तीशगढ़, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटका, तमिलनाडु मे फैली हुई है। इसके अलावे अन्य कई प्रदेशों मे भी यह रोग देखी गई है। भारत वर्ष मे यह रोग सबसे गंभीर समस्या बन गया है। यह रोग बिहार मे भी बड़ी तेजी से फैल रहा है। यह रोग जैन्थोमोनास ओराइजी पी.वी. ओराइजी नामक जीवाणु से होता है।

मुख्य रूप से यह पत्तियों का रोग है। यह रोग कुल दो अवस्थाओं मे होता है, पर्ण झुलसा अवस्था एवं क्रेसेक अवस्था। सर्वप्रथम पत्तियों के ऊपरी सिरे पर हरे-पीले जलधारित धब्बों के रूप मे रोग उभरता है। पत्तियों पर पीली या पुआल के रंग कबी लहरदार धारियाँ एक या दोनो किनारों के सिरे से शुरू होकर नीचे की ओर बढ़ती है और पत्तियाँ सूख जाती हैं। ये धब्बें पत्तियों के किनारे के समानान्तर धारी के रूप मे बढ़ते हैं। धीरे-धीरे पूरी पत्ती पुआल के रंग मे बदल जाती है। ये धारियां शिराओं से धिरी रहती है, और पीली या नारंगी कत्थई रंग की हो जाती है। मोती की तरह छोटे-छोटे पीले से कहरूवा रंग के जीवाणु पदार्थ धारियों पर पाये जाते है, जिससे पत्तियाँ समय से पहले सूख जाती है। रोग की सबसे हानिकारक अवस्था म्लानि या क्रेसक है, जिससे पूरा पौधा सूख जाता है। रोगी पत्तियों को काट कर शीशे के ग्लास मे डालने पर पानी दुधिया रंग का हो जाता है। जीवाणु झुलसा के लक्षण धान के पौधे मे दो अवस्थाओं मे दिखाई पड़ते है। म्लानी अवस्था (करेसेक) एवं पर्ण झुलसा (लीफ ब्लास्ट) जिसमें पर्ण झुलसा अधिक व्यापक है। झुलसा अवस्था: पत्ती की सतह पर जलसिक्त क्षत बन जाते है, और इनकी शुरूआत पत्तियों के ऊपरी सिरों से होती है। बाद मे ये क्षत हल्के पीले या पुआल के रंग के हो जाते हैं, और लहरदार किनारें सहित नीचे की ओर इनका प्रसार होता है। ये क्षत उत्तिक्षयी होकर बाद मे तेजी से सूख जाते है। म्लानी या क्रेसेक अवस्था: रोग की यह अवस्था दौजियाँ बनना आरम्भ होने के दौरान नर्सरी मे दिखाई पड़ती है। पीतिमा एवं अचानक म्लानी इसके सामान्य लक्षण है। म्लानि वस्तुत: लक्षण की दूसरी अवस्था है। ये लक्षण रोपाई के ३-४ सप्ताह के अन्दर प्रकट होने लगते है। इस अवस्था मे ग्रसित पौधो की पत्तियाँ लम्बाई मे अन्दर की ओर सिकुड़कर मुड़ जाती है। जिसके फलस्वरूप पूरी पत्ती मुरझा जाती है, जो बाद मे सूख कर मर जाती है। कभी-कभी क्षतस्थल पत्तियों के बीच या मध्य शिरा के साथ-साथ पाये जाते है। ग्रसित भाग से जीवाणु युक्त श्राव बूंदों के रूप मे निकलता है। ये श्राव सूखकर कठोर हो जाते है। और हल्के पीले से नारंगी रंग की कणिकाएॅ। अथवा पपड़ी के रूप मे दिखाई देता है। आक्रांत भाग से जीवाणु का रिसाव होता है। यदि खेत मे पानी का जमाव हो तो धान की फसल से दूर से बदबू आती है। पर्णच्छद भी संक्रमित होता है, जिस पर लक्षण पत्तियों के समान ही होते है। रोग के उग्र अवस्था मे ग्रस्त पौधे पूर्ण रूप से मर जाते है।

रोग नियंत्रण:-

१.एक ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन या ५ ग्राम एग्रीमाइसीन १०० को ४५ लीटर पानी घोल कर बीज को बोने से पहले १२ घंटे तक डुबो लें।

२.बुआई से पूर्व ०.०५ प्रतिशत सेरेसान एवं ०.०२५ प्रतिशत स्ट्रेप्टोसाईक्लिन के घोल से उपचारित कर लगावें।
३.बीजो को स्थूडोमोनास फ्लोरेसेन्स १० ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित कर लगावें।
४.खड़ी फसल मे रोग दिखने पर ब्लाइटाक्स-५० की २.५ किलोग्राम एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की ५० ग्राम दवा ८०-१०० लीटर पानी मे मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
५.खड़ी फसल मे एग्रीमाइसीन १०० का ७५ ग्राम और कॉपर आक्सीक्लोराइड (ब्लाइटाक्स) का ५०० ग्राम ५०० लीटर पानी मे घोलकार प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
६.संतुलित उर्वरको का प्रयोग करे, लक्षण प्रकट होने पर नेत्रजन युक्त खाद का छिड़काव नही करना चाहिए।
७.धान रोपने के समय पौधे के बीज की दूरी १०-१५ से.मी. अवश्य रखें।
८.खेत से समय-समय पर पानी निकालते रहें तथा नाइट्रोजन का प्रयोग ज्यादा न करें।
९.आक्रांत खेतों का पानी एक से दूसरें खेत मे न जाने दें।
१०.स्वस्थ प्रमाणित बीजों का व्यवहार करें।
११.रोग रोधी किस्मों जैसे- आई. आर.-२०, मंसूरी, प्रसाद, रामकृष्णा, रत्ना, साकेत-४, राजश्री और सत्यम आदि का चयन करें।

दुधारू पशुपालन की उन्नत तकनीक

डॉ.अनिल कुमार राय एवं
डॉ.एस.एन. लाल

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की जनता खेती एवं पशुपालन द्वारा जीवन निर्वाह करती है। पशु पालन हमारे देश में कृषि से भ पहले से किया

रहा है। आज हमारे देश में पशुपालक आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करने को उत्सुक हैं जिससे कम से कम खर्च में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। उन्नत पशु पालन हेतु कुछ बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती, जिनका विवरण निम्नवत है।

उचित नस्ल का चुनाव

दुग्ध उत्पादन हेतु किया जाता है। अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए अच्छी नस्ल के गाय व भैंस का चुनाव करना चाहिए। हमारे देश की अधिकांश नस्लें काम दुग्ध उत्पादन करती है, किन्तु देशी नस्ल की गाय व भैंस में रोग रोधी क्षमता अधिक होती है। हमारे देश की जलवायु में जर्सी व हालस्टीन फ्रीजियन द्वारा संकर कृत नस्ल भली-भाँती पाली जाती है। अत: जर्सी व देशी की संकर या हालस्टीन व देशी की संकर नस्ल की पायी जाती हैं। अत: भैंसों में संकरीकरण नहीं अपनाया गया है। अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु मुर्रा तथा जाफराबादी नस्ल की भैंसों का पालन किया जाता है। गायों में भी साहीवाल, सिन्धी, गिरी, थारपाकर नस्ल की देशी गाय दुग्ध उत्पादन के लिए अच्छी होती है।

नस्ल सुधार के उपाय

परम्परागत रूप से हमारे देश में कम दूध देने वाले देशी पशुओं का पालन प्रत्येक घर में किया जाता रहा है। अधिक दूध प्राप्त करने के लिए देशी गायों को विदेशी नस्ल जैसे जर्सी व हालस्टीन फ्रीजियन के साथ संकर नस्ल तैयार करने की योजना बनाई गई। आज देश के प्रत्येक भाग में पशुपालन विभाग द्वारा वृत्रिम गर्भाधान वेंद्र स्थापित है एवं संकर नस्ल के पशुओं की पर्याप्त संख्या देश के कोने-कोने में विद्यमान है। कृत्रिम गर्भाधान ने पशुओं की दुग्ध उत्पादन गुणवत्ता में क्रांतीकारी सुधार किया एवं भारत को दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर ला खडा किया है।

भैंस पहले से ही भारतवर्ष में उन्नत किस्म की पाली जाती रही है, अत: भैंस में नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान जैसी विधियों का प्रयोग नहीं किया गया, इसके स्थान पर उत्तम नस्ल सुधार हेतु एक अन्य वैज्ञानिक विधि 'भ्रूण प्रत्यारोपण' का प्रयोग हो रहा है। इस विधि में कुछ चुनी गई अधिकतम उत्पादन वाली गायों का कृत्रिम वैज्ञानिक विधि द्वारा 'अण्डा' प्राप्त कर अच्छी नस्ल के साँड के वीर्य से निशेचित करा कर भ्रूण उत्पादन करते है एवं भ्रूण को साधारण गायों की बच्चेदानी में कृत्रिम वैज्ञानिक विधि द्वारा प्रत्यारोपित कर देते है।

भैंस के बच्चों का उचित पालन-पोषण

पशुपालन में अच्छी नस्ल के चुनाव व पालन के बाद सबसे महत्वपूर्ण स्थान बच्चों के समुचित पालन-पोषण का है। कम आयु के बच्चों का उचित रख-रखाव होने पर ही श्रेष्ठ वयस्क तैयार हो सकेंगे। बच्चों के पैदा होते ही सर्वप्रथम उसके नाक व मुख को स्वच्छ कपडे से साफ करना चाहिए, जिससे ठीक प्रकार से सांस ल सके।

संक्रामक रोग

संक्रामक रोग तेजी से फैलते है जिसमें शीघ्र ही अधिक संख्या में पशु बीमार हो जाते है तथा इन बीमारियों से मृत्यु भी अधिक होती है। ये निम्न प्रकार के होते है।

(क) विषाणु जनित रोग

इसमें मुख्यत: खुरपका तथा पोंकनी रोग आते है। खुरपका-मुँहपका में रोगी पशु के मुँह में तथा खुर के चारों और छोटे-छोटे फफोले बन जाते है। पशु को चलने में कठिनाई होती है। मुँह के छालो- फफोलों के कारण पशु चारा खाने में असमर्थ हो जाते है और तेज बुखार हो जाता है तथा मुँह से लार गिरती है। पोंकनी रोग में पशु पतला दस्त करता है। पशु को तेज बुखार होता है। पशु की आंखे लाल हो जाती है, तथा नाक से पानी जैसे पदार्थ सा स्राव होता है।

(ख) जीवाणु जनित रोग

गाय-भैंसों के जीवाणु जनिण रोग मुख्यत: गलाघोंटू, लंगडिया तथा प्लीहा ज्वर (एन्थ्रक्स) है। गलाघोंटू से प्रभावित पशुओं में अनेक की मृत्यु हो जाती है। यह बीमारी बरसात के समय होती है। इसकें पशु को तेज बुखार होता है, पशु भूख समाप्त हो जाती है। पशु के गले में धीरे-धीरे सूजन आती है। पशु बेचैन हो जाता है तथा जीभ बाहर निकाल कर सांस लेने का प्रयास करता है। सांस न ले पाने के कारण पशु की मृत्यु हो जाती है। लंगडिया नामक रोग भी बरसात में ही होता है। इसमें काम उम्र (**2-4** वर्ष) के पशु ज्यादा प्रभावित होते है। पशु को तेज बुखार होता है। पशु जुगाली व खाना बन्द कर देता है। चलने में लंगडाहट उत्पन्न हो जाती है। पैरों के ऊपरी

भाग (जाँघ) की मासपेशियों में सूजन तथा कालापन आ जाता है जहाँ दबाने पर कडकडाहट की आवाज सुनाई देती है। प्लीहा ज्वर शीघ्रता से फैलने वाला संक्रमक रोग है। यह भी बरसात के प्रांरभ होने पर ज्यादा होता है। पशु बिना किसी पूर्व लक्षण के मृत पाए जाते है। मृत पशु के कान, नाक, मुँह तथा गोबर के रास्ते से रक्तस्राव होता है। इस बीमारी से मृत पशु को खोले बिना ही दबा अथवा जला देना चाहिए।

उपरोक्त सभी संक्रामक रोगों से बचाव हेतु प्रत्येक वर्ष बरसात से पूर्व टीका लगाया जाता है। प्रत्येक टीके में **15-30** दिन का अन्तराल आवश्यक होता है। पशुपालकों को चाहिए कि सभी रोगो से बचाव हेतु टीका अवश्य लगा देना चाहिए तथा रोगी पशु के रहने के स्थान को फिनायल से विसंक्रमित करना चाहिए।

पशुओं के परजीवी रोग

पशुओ में इन रोगों के अतिरिक्त बाह्य परजीवियों व अंत परजीवियो का प्रकोप भी बहुजायज से पाया जाता है। परजीवी जनित रोग भी वर्षा ऋतु में ज्यादा होते है। बाह्य परजीवियों में किलनी, जूँ माइट्स तथा फलीज आदि है। ये पशुओं का खून पीते है और अन्य बीमारियो को एक पशु से दूसरे पशु में पहुँचाते है।

अत: परजीवियो में मुख्यत: यकृत कृमि है। पशुओं को रुके हुए पानी के स्रोत के आस-पास चरने नही भेजना चाहिए। न ही वहाँ की उगी हुई घास पशु को काटकर खिलानी चाहिए क्योंकि इस रोग के परजीवि इन स्थानों की घास पर चिपके रहते है। इसके अतिरिक्त मल परिक्षण करके समय-समय पर उचित दवाओं का प्रयोग करना चाहिए। पशुओ का उत्तम आवास व्यवस्था, पशुशाला की स्वच्छता,अच्छी नस्ल के पालन, अच्छा संतुलित आहार तथा रोग से बचाव के उपाय अपनाकर अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसमें पशु का, पशु पालक का समाज का व देश का हित निहित है।

रेगिस्तान का जहाज...ऊँट

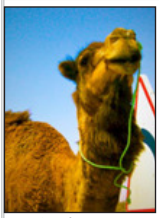

ऊँट रेगिस्ताकनी पारिस्थिति तंत्र का एक महत्व पूर्ण घटक है। अपनी अनूठी जैव-भौतिकीय विशेषताओं के कारण यह शुष्का एवं अर्द्ध शुष्कत क्षेत्रों की विषमताओं में जीवनयापन की अनुकूलनता का प्रतीक बन गया है। /रेगिस्तान का जहाज/ के नाम से प्रसिद्ध इस पशु ने परिवहन एवं भारवाहन के क्षेत्र में अपरिहार्यता दर्शाते हुए अपनी पहचान बनाई है परंतु इसके अतिरिक्तन भी ऊँट की बहुत सी उपयोगिताएं हैं जो निरन्तबर सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित होती है। ऊँटों ने प्राचीन काल से वर्तमान समय तक नागरिक कानून एवं व्यिवस्थाभ, रक्षा व युद्ध के क्षेत्र में महत्त् भूमिका निभाई है। तत्काकलीन बीकानेर के विश्वभ प्रसिद्ध गंगा रिसाले को शाही सेना में स्थाकन मिला था तथा इन ऊँटों ने प्रथम एवं द्वितीय विश्वस युद्धों में भी भाग लिया था। राजस्थानन के पश्चिमी भाग में इन्दिरा गांधी नहर के निर्माण के समय ऊँटों ने इंजीनियरों की बहुत सहायता की थी। आजकल उष्ट्रं कोर भारतीय अर्द्ध सैनिक बल के अन्तर्गत सीमा सुरक्षा बल का एक महत्वउपूर्ण भाग है।.

ऊँट रेगिस्तानन्नी पारिस्थिति तंत्र का एक महत्वकपूर्ण घटक है। अपनी अनूठी जैव-भौतिकीय विशेषताओं के कारण यह शुष्कि एवं अर्द्ध शुष्क् क्षेत्रों की विषमताओं में जीवनयापन की अनुकूलनता का प्रतीक बन गया है। /रेगिस्तांन का जहाज/ के नाम से प्रसिद्ध इस पशु ने परिवहन एवं भारवाहन के क्षेत्र में अपरिहार्यता दर्शाते हुए अपनी पहचान बनाई है परंतु इसके अतिरिक्तव भी ऊँट की बहुत सी उपयोगिताएं हैं जो निरन्तर सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित होती है। ऊँटों ने प्राचीन काल से वर्तमान समय तक नागरिक कानून एवं व्यपवस्थौ, रक्षा व युद्ध के क्षेत्र में महत्ती भूमिका निभाई है। तत्कापलीन बीकानेर के विश्व प्रसिद्ध गंगा रिसाले को शाही सेना में स्था न मिला था तथा इन ऊँटों ने प्रथम एवं द्वितीय विश्वद युद्धों में भी भाग लिया था। राजस्थुान के पश्चिमी भाग में इन्दिरा गांधी नहर के निर्माण के समय ऊँटों ने इंजीनियरों की बहुत सहायता की थी। आजकल उष्ट्रइ कोर भारतीय अर्द्ध सैनिक बल के अन्तोर्गत सीमा सुरक्षा बल का एक महत्वआपूर्ण भाग है।

[redacted] द्ध शुष्की [redacted] विकास [redacted] वह को [redacted] ए भारत [redacted] य कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअप) के अधीन बीकानेर में उष्ट्र परियोजना निदेशालय की स्थाापना ५ जुलाई, १९८४ को की थी। यह केन्द्र बीकानेर से लगभग १० किलोमीटर

की दूरी पर जोड़बीड़ क्षेत्र में स्थित है जिसे २० सितम्बर, १९९५ को क्रमोन्न१त कर राष्ट्रीरय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र का नाम दिया गया है।

भारत में एक कूबड़ीय ऊँटों की संख्याद लगभग ५ लाख है जो मुख्य तया भारत के उत्त र-पश्चिमी शुष्कस एवं अर्द्ध शुष्क भाग के सीमांत राज्युों की राजस्था न,गुजरात एवं हरियाणा में पाए जाते हैं। राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र एक कूबड़ वाले ऊँटों पर आधारभूत एवं व्यापवहारिक अनुसंधान के साथ-साथ लद्दाख की नूब्रा घाटी के ठंडे रेगिस्ता न में पाए जाने वाले दो कुबड़ीय ऊँटों पर भी अनुसंधान हेतु ध्यालन केन्द्रित कर रहा है।

प्रारंभ में यह केन्द्री आधारभूत सुविधाओं के विकास तथा उष्ट्र -संरक्षण व इनकी वर्तमान प्रजातियों के परिरक्षण तथा वैज्ञानिक व तकनीकी जानकारी जुटाने में लगा हुआ था। गत २४ वर्षों में अत्यौधुनिक प्रयोगशालाओं एवं आधारभूत सुविधाओं के विकसित होने से यह ऊँटों पर अनुसंधान करने वाला विश्वञ का अग्रणी संस्थावन बन गया है। चयनित प्रजनन प्रणाली द्वारा बीकानेरी, जैसलमेरी, कच्छीं व मेवाड़ी नस्ल। के ३५० उत्कृदष्टु ऊँटों का समूह विकसित किया गया है। केन्द्रै के वैज्ञानिकों द्वारा आणविक चिह्नक पद्धति का उपयोग करते हुए एक ही नस्लय में एवं विभिन्न् नस्लों के बीच अनुवांशिक भिन्निताओं का पता लगाया गया है। प्रमुख देशी उष्ट्र नस्लों के गुणों का निर्धारण किया गया है। वीर्य का हिमीकरण सफलतापूर्वक किया गया है तथा कृत्रिम गर्भाधान तकनीकी का मानकीकरण किया जा रहा है। विभिन्नप दैहिक अवस्थारओं में जनन हार्मोनों की मात्रा का पता लगाया गया है। केन्द्रह में भ्रूण प्रत्यौरोपण तकनीक का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। केन्द्र द्वारा माहवार कार्यक्रम सम्बेन्धीत वार्षिक कैलेंडर तैयार किया गया है जिसमें ऊँटों की प्रबन्धमन विधियों तथा उचित रख-रखाव द्वारा रोगों से बचाव की जानकारी दी गई है। सर्री रोग के निदान की पुष्टि हेतु पीसीआर तकनीक मानकीकृत की गई है।

ऊँटों की विभिन्नम नस्लों की कार्यक्षमता के मूल्यांाकन का विस्तृात अध्य यन किया जा रहा है। दुग्धनकाल, गर्भकाल तथा शारीरिक श्रम की विभिन्न् अवस्थाओं में ऊँटों की आहार आवश्यकताओं का आकलन किया गया है। स्थाशनीय स्त्रोतों से उपलब्धा चारे एवं आहारों का भी मूल्यांककन किया गया है।

केन्द्र ऊँट को दुधारू पशु के रूप में स्थातपित करने की ओर प्रयासरत है। ऊँटनी के दूध एवं इससे बनने वाले उत्पा दों की बढ़ती मांग को देखते हुए केन्द्र परिसर में एक अत्याधधुनिक उष्ट्रउ डेयरी स्थाढपित की गई है। केन्द्रि का यह कदम न केवल उष्ट्रर पालकों को दुग्धध व्यिवसाय की ओर प्रेरित करेगा अपितु ग्रामीण लोगों के समाजार्थिक स्तमर को भी ऊँचा उठाने संबंधी दूरगामी परिणाम देने वाला सिद्ध होगा। उष्ट्रण दुग्धज पर सुव्यववस्थित अनुसंधान तथा इसकी अलग-अलग नस्लों से दुग्धो उत्पागदन पर अनुसंधान कार्य किया जा रहा है।

उष्ट्रा दुग्धह के सामान्यि ताप पर जीवन एवं इसकी औषधीय उपयोगिता पर व्याऊपक शोध कार्य किया जा रहा है। केन्द्रा द्वारा मूल्य संवर्धित उष्ट्र दुग्धप उत्पाीद यथा आइसक्रीम, सुगन्धित दूध एवं दही विकसित किए गए हैं। केन्द्र द्वारा अपने परिसर में मिल्क् पार्लर के माध्यधम से इन उत्पातदों की बिक्री की जाती है। केन्द्रि द्वारा एक उष्ट्र दुग्ध निर्मित सौन्दकर्य क्रीम का निर्माण किया गया है। उष्ट्र हड्डियों को हाथी दॉंत के स्था न पर तथा बालों को ऊन में मिलाकर नए उत्पायद विकसित हो रहे हैं। केन्द्रो द्वारा पारम्प्रिक दो पहियों वाले ऊँट गाड़े का विद्युतीकरण किया गया है जो कि रात्रि के समय में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं की संभावनाओं को कम करता है।

ऊँटों की बहुआयामी उपयोगिता के उद्देश्यस से/ उष्ट्रर बल द्वारा कृषि प्रसंस्कवरण एवं विद्युत उत्पादन/ इकाई की स्थायपना की गई है। ऊँटों द्वारा उत्पानदित जैव ऊर्जा नवीयन एवं पर्यावरणीय दुष्प्र भावों से मुक्त् है। ग्रामीण जन जीवन के विभिन्न गृह एवं कृषि कार्यों में ईसकी उपलब्धषता से इसे उपयोग में लाना निश्चित रूप से आर्थिक आत्म -निर्भरता प्रदान करेगा।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.
137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL
MR. ALOK BENIWAL
MOB: 9660258447

गर्भवती व धात्री महिलाओं के लिए आवश्यक संतुलितआहार

DR.SADHANA SINGH -9450766647
NARENDRA DEV UNIVERSITY OF ARICULTURE AND TECHNOLOGY (NDUTA)
EMAIL: dolmanduat@gmail.com

डा. साधना सिंह'

गर्भावस्था जीवन का एक स्वर्णिम अवसर है जिसकी इच्छा हर स्त्री को होती है।चूंकि एक गर्भवती मां अपने भ्रूण को पोशण देती है अतः उसके पोशण एव स्वास्थ्य का सीधा सम्बन्ध जन्म के समय षिषु के भार से होता है। एक स्वस्थ्य स्त्री ही एक स्वस्थ्य शिशु को जन्म दे सकती है यदि गर्भवती स्त्री कुपोषण का शिकार होती है घ्ं`गर्भावस्था के दौरान होने वाली परेषानियाँ भी बढ़ जाती है। आज भी हमारे देष में बहुतायत औरते कम भार वाली तथा खून की कमी से ग्रस्त हैं।गर्भावस्था के दौरान स्त्रियों की असयमृत्यु का मुख्य कारण कम उम्र में विवाह होना, षरीर का गर्भाधारण के लिए परिपक्व न होना, कम अन्तराल पर घ्ं घ्घ्घ्घ `होना व समुचित पोशण न मिलना आदि है।

गर्भावस्ता के दौरान स्त्री का `अतिरिक्त पोशण की जरूरत होती हैजिससे उसके षरीर में`उत्तकों की रचना हो सके, वसा का संचय हो सके तथा स्तनों का`दूध के निर्माण के लिए तैयार किया जा सके।इसी प्रकार विटामिन "बी" व विटामिन "ए" की कमी भी गर्भवती स्त्रियों में काफी पायी जाती है।

गर्भावस्था में माता के षरीर में होने वाले परिवर्तनों के कारण पाचन क्रिया भी प्रभावित होती है।इसके अतिरिक्त जी मिचलाना, उल्टिया होना, कब्ज रहना आदि जैसी सामान्य परेषानिया भी गर्भवती स्त्रियों में प्रायः पायी जाती है।

गर्भावस्था को तीन–तीन महीने के लिए तीन चरणों में बाटां गया है।पहले चरण में अतिरिक्त पौशिक तत्वों की आवष्यकता कम होती है परन्तु धीरे–धीरे दूसरे व तीसरे चरण में अतिरिक्त पोशक तत्वों की आवष्यकता अधिक होतीहै।पहले दो चरणों में उत्तकों के निर्माण व वसा (चर्बी) के जमाव के लिए अतिरिक्त आहार की आवष्यकता होती है।इन चरणों में भ्रूण की वृद्धि धीमी स्तर से होती है परन्तु गर्भावस्था के अन्तिम तीन महीनों में षिषु (भ्रूण) की वृद्धि तथा षिषु के लिए वसा, आयरन (लौह तत्व) एवंविटामिन "ए" के भण्डारण के लिए ज्यादा आहार की आवष्यकता होती है।

गर्भावस्था के दौरान षरीर के भार में वृद्धि षिषु के अच्छे विकास का सूचक है। यह वृद्धि भ्रूण, प्लेसेन्टा, एमनियोटिक तरल पदार्थ, गर्भाषय के आकार व मांसपेषियों के अन्दररक्तकीमात्रा में वृद्धि तथा षारीरिक चर्बी में वृद्धि आदि के कारण होती है।गर्भावस्था में एक सामान्य स्त्री का भार 10–12 किलोग्राम बढ़ना चाहिए जबकि हमारे देष में सामान्यतः यह वृद्धि 6–7 किलोग्राम ही होती है।कमजोर

महिलायें कम भार वाल`षिषुओं को जन्म देती हैं तथा उनमें बाल मृत्यु भी अधिक होती है।कमजोर षिषु बड़े होने पर कमजोर वयस्क बनते हैं। यदि षिषु लड़की होती है तो वह किषोरावस्था में वे कम भारवाली किषोरी बनती है जो छोटी वयस्क बनती है और पुनः कम भारवाल`षिषुओं को जन्म देती है।अतः कुपोशण का दुश्चक्र इसी प्रकार चलता रहता है।

गर्भवती महिलाओं के आहार से सम्बन्धित कई अंधविष्वास व धारणायें भी महिला कुपोशण के लिए जिम्मेदार हैं जैसे पपीता व अण्डा खाने से गर्भपात हो जायेगा, अधिक भोजन लेने से बच्चा बड़ा होगा तथा प्रसव के दौरान परेषानी होगी आदि।

गर्भवती स्त्रियों में व्यापक रूप से अनिमिया (खून की कमी) को देखते हुए सरकार द्वारा गर्भवती महिलाओं को आयरन एव`फोलिक एसिड की सम्पूरक खुराकें (60 मिग्रा. ऐलिमेन्टलआयरन एवं 500 माइक्रोग्रामफोलिक एसिड)न्यूनतम100 दिनों तक दी जाती है। ये दवाईयाँ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर मुत में दी जाती है परन्तु अभी भी महिलाय विभिन्न कारणों जैसे लौहतत्वों के दुश्प्रभावों की जानकारी न होना, स्वास्थ्य केन्द्रों पर नियमित उपलब्धता न होने आदि के कारण इनका उपयोगबहुत ही कम करती हैं।

दुग्ध पिलाने वाली माताओं को भी विषेशआहार की आवष्यकता होती है।क्योंकि दुग्ध के निर्माण के लिए पौश्टिक तत्वों की आवष्यकता होती है।माँ कादूध षिषु के लिए वरदान है।षिषु के जन्म के तुरन्त बाद निकलने वाला पहला गाढ़ा दूध कोलस्ट्रम कहलाता है।इस शिशु को अवश्य पिलाना चाहिए क्योंकि यह बच्चे

की रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।इसके अलावा भी माँ के दूध के कई लाभ है जैसे यह जीवाण्ुरहित व षिषु की आवष्यकताओं के अनुरूप होता है।माँ का दूध पिलाने से माँ व षिषु दोनों को संतुश्टि का अहसास होता है।

माँ के दूध की संरचना माँ के द्वारा लिये गये आहार पर निर्भर करती है।अतः यह आवष्यक ह`कि धात्री महिला के आहार पर विषेश ध्यान दिया जाय।माँ का दूध षिषु की आवष्यकताओं के अनुरूप होता है। उसमें पाई जानेवाली प्रोटीन की मात्रा शिशु के अंगों पर अधिक जोर नहीं डालती है व आसानी से पच जाती है।

अतः गर्भवती व धात्री महिलाओं को सन्तुलित आहार लेना चाहिए व निम्नबातों को ध्यानमें रखना चाहिएः–

1.टाहामें विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों को षामिल करें। ध्यान र

2.`कि दैनिक आहार में सभी खाद्य समूह जैसे अनाज, दालें, तिलहन, सूखे मेवे, दूध व दुग्ध पर आधारित खाद्य पदार्थ, फल व सब्जियाँ, वसा व षर्करा व यदि माँसाहारी है तो अण्डे, माँस या मछली षामिल हो।दालों व अनाजको 1:7 या 1:8 के अनुपातमें षामिलकरें।

3.फल व सब्जियाँ विटामिन, खनिज व रेषेका अच्छा स्रोत है अतः इन का नियमित उपयोग करें।

4.दूध अच्छी किस्म की प्रोटीन व विटामिन और खनिज लवणों का स्रोत होने के साथ ही षाकाहारी आहार मेंविटामि बी–12 का एकमात्र स्रोत है अतः इसका उपयोग नियमित रूप से करना चाहिए।

5.लौहतत्वयुक्त खाद्य पदार्थ जैसे–लीवट, गुड़, तिल, चूड़ा, अंकुरित अनाज, साबुत अनाज आदि भरपूर मात्रा मेंलें।

सारणी–1: वयस्कमहिलाहेतुसंस्तुतसंतुलितआहार*

खाद्य पदार्थ	हल्काकार्य		मध्यम कार्य		भारीकार्य		अतिरिक्त	
	शाकाहारी (ग्राम)	मांसाहारी (ग्राम)	शाकाहारी (ग्राम)	मांसाहारी (ग्राम)	शाकाहारी (ग्राम)	मांसाहारी (ग्राम)	गर्भावस्था (ग्राम)	धात्री (ग्राम)
अनाज	300	300	350	350	475	475	50	100
दालें	60	45	70	55	70	55		10
हरपत्तेदारसब्जियां	125	125	125	125	125	125	25	25
अन्य सब्जियां	75	75	75	75	100	100	—	—
जड़ वालीसब्जियां	50	50	75	75	100	100	—	—
फल	30	30	30	30	30	30	—	—
दूध	200	100	200	100	200	100	125	125
वसा व तेल	30	35	35	40	40	45	—	15
चीनी व गुण	30	30	30	30	40	40	10	20
मीट व मछली	—	30	—	30	—	30	—	—
अण्डे	—	30	—	30	—	30	—	—
मूंगफली	—	—	—	—	40*	40*	—	—

*मूंगफली के स्थानपर 25 ग्रामअतिरिक्तवसा वातेलउपयोगकियाजासकताहै।

तुलसी की वैज्ञानिक तकनीक द्वारा उन्नत खेती

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

तुलसी की लगभग 60 प्रजातियाँ एशिया, अफ्रीका, अमेरिका तथा अन्य देशों में पाई जाती है। इनमें ओसीमम सेन्कटम (घरेलू तुलसी) ओ. बेसीलिकम, ओ. केनम या अमेरिकेनम (काली तुलसी) ओ. ग्रेटीसीमम (वन या राम तुलसी) ओ. क्लीमेन्डसचेरिकम (कपूर तुलसी) एवं ओ. विरिडी (जंगली तुलसी) प्रमुख है। तुलसी का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण एवं सगंध तेल का उत्तम स्त्रोत हैं।

उपयोग : विभिन्न प्रजातियों की तुलसी के तेल में रासायनिक तत्व अलग–2 होने के कारण विभिन्न उत्पादों में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सुगंध बनाने, सर्दियों की औषधियों निर्माण, खाँसी एवं कफ की दवा बनाने, कन्फैक्शनरी उद्योग एवं टुथ पेस्ट, माऊथवास, डेन्टल क्रीम आदि के निर्माण में किया जाता है। इसका तेल खाद्य पदार्थों को सुवासित करने में भी किया जाता है।

प.मीठी तुलसी (ओसीमम बेसीलिकम)

ओसिमम बेसिलिकम को स्वीट बेसिल या फ्रेंच बेसिल या इंडियन बेसिल आदि नामों से भी जानते हैं। यह प्रजाति बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि इसमें मीठा तुलसी का तेल (स्वीट बेसिल आयल) मिलता है। लगभग 3000 साल से इसकी खेती यूरोप और एशिया में की जा रही है। ओसिमम बेसिलिकम लेमिएसी कुल का पौधा है। पौधे की लंबाई 30–90 सैंमी. होती है। पत्तियों की लंबाई 3–5 सैंमी. होती है। पौधे में बहुत सी तेल कोशिकाएं होती हैं जो सगंध तेल देती है।

जलवायुः तुलसी को सभी प्रकार की जलवायु वाले स्थानों पर उगाया जा सकता है। उत्तर भारत के मैदानी भागों में तुलसी को ग्रीष्म ऋतु की फसल के रूप में उगाया जा सकता है। तुलसी की संतोषजनक वृद्धि के लिए मध्यम तापक्रम अधिक उपयुक्त रहता है। अधिक वर्षा तथा पाला तुलसी की उपज पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

भूमिः तुलसी को विभिन्न प्रकार की मृदाओं एवं जलवायु में आसानी से उगाया जा सकता है। तुलसी की खेती करने के लिए दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी जिनका पी. एच. 5–8 हो एवं जलधारण क्षमता अच्छी हो, उपयुक्त समझी जाती है। अधिक रेतीली व भारी दोमट मिट्टी उपयुक्त नहीं है।

खेत की तैयारीः खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो बार देशी हल या कल्टीवेटर से जोत कर पाटा लगाएं। गोबर की गली सड़ी खाद उपलब्ध हो तो अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला दें। खेत की तैयारी इस प्रकार करें कि मई–जून में पौध लग जाए।

किस्मः कुसुमोहक एवं विकार सुधा ब्ड ।च् लखनऊ द्वारा विकसित किस्में हैं।

नर्सरीः मैदानी भागों में बीज की नर्सरी अप्रैल–मई में एक मीटर चौड़ी व चार मीटर लंबी उठी हुई बनाएं तथा घास–फूस रहित हो। प्रत्येक क्यारी में 4 किलो गोबर की गली सड़ी खाद मिलाएं तथा प्रति क्यारी 20–30 ग्राम बीज बोएं। तुलसी का बीज बहुत ही हल्का होता है इसलिए उसमें रेत मिला लें। बुवाई करते समय लाईन से लाईन की दूरी 6 सैंमी. रखें। एक एकड़ की रोपाई के लिए 8 क्यारियां तथा 200–250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीज का भाव लगभग 500 रु. प्रति किलो है। नर्सरी को पुआल से ढक दें व सिंचाई करें। तुलसी का बीज 3–10 दिन में जम जाता है। जैसे ही बीज उग आए पुआल को हटा दें। ज्यादा गर्मी के दिनों में हल्का पानी सुबह और शाम लगाएं। 20–25 दिन के बाद पौधा 10–15 सैंमी. का हो जाए तो उसे उखाड़ कर खेत में रोप दें।

रोपाईः नर्सरी से पौध उखाड़ने के तुरंत बाद पौध को गीले कपड़े या टाट की बोरी से ढक दें जिससे अधिक गर्मी के कारण पौध न मुरझाए। पौधों की रोपाई सायंकाल में करें। लाईन से लाईन की दूरी 45 सैंमी. तथा पौधों की दूरी 30 सैंमी. रखें। प्रत्येक क्यारी की रोपाई करने के बाद सिंचाई करते जाएं।

खादः तुलसी की खेती में अधिक पैदावार के लिए 15–16 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ खेत तैयार करते समय डालें।

सिंचाई तथा जल प्रबंधः वर्षा शुरू होने से पहले 10–12 दिन के अंतर पर सिंचाईयां करें। सितंबर में भी सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है। अधिक वर्षा होने पर ज्यादा देर तक खेत में पानी न रुकने दें।

निराई–गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रणः पहली निराई गुड़ाई 20–25 दिन बाद तथा दूसरी 40–45 दिन बाद करनी चाहिए।

कटाईः तुलसी की फसल 10–12 सप्ताह में तैयार हो जाती है। पौधों की निचली पत्तियाँ पीली पड़ने पर फसल की कटाई करें। अंतिम कटाई के समय पूरे पौधे को ही काट कर तेल निकलवा सकते हैं। कटाई के बाद 4–5 घंटे फसल को हल्की धूप में सुखा लें। पहली कटाई 75–90 दिन तथा शेष कटाईयां 45–60 दिन के अंतराल पर करें। फसल की कटाई भूमि की सतह से 15–20 सैंमी. ऊपर से करें जिससे अगली कटाई के लिए फसल जल्दी तैयार हो सके। शाक की पैदावार और तेल की मात्रा भूमि की उर्वरा शक्ति और जलवायु पर निर्भर करती है।

प्रमुख कीटः तुलसी में कई प्रकार के कीट पत्तियों व फूलों को खाकर नष्ट करते हैं जिनमें से प्रमुख कीट इस प्रकार हैं :

प) तुलसी का पर्ण बेलक (बासिल लीफ रोलर) : इस कीट का प्रकोप मैदानी भागों में जुलाई से सितंबर तक देखा गया है। सूंडी पत्तियों को लपेट कर अंदर ही अंदर नष्ट कर देती है। कभी–कभी कीट की सूंडी फूल के पास जाला सा बना कर अंदर फूल को चट कर जाती है। रोकथाम के लिए बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

पप) रोमयुक्त सूंडी (हेयरी कैटरपिलर) : वयस्क मादा समूह में निचली पत्तियों पर अंडे देती है। 4–6 दिन में अंडों से बच्चे निकलने लगते हैं। प्रथम व द्वितीय अवस्था में सूंडियां समूह में रह कर पूरा पौधा चट कर जाती है। तीसरी व चौथी अवस्था में सूंडी एक पौधे से दूसरे पौधे पर, फिर धीरे–धीरे पूरे खेत में पहुंच जाती है। रोकथाम के लिए शुरू की अवस्था में जब कीट समूह में हो तो पौधे को उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

प्रमुख रोगः

प) झुलसा (ठसपहीज): यह रोग आल्टरनेरिया नामक फफूंदी द्वारा होता है। रोग से पौधे के ऊपरी भाग में चकते बन जाते हैं जो शुरू में बादामी तथा बाद में काले हो जाते हैं। कभी–कभी रोग तने पर भी चकते बनाता है। रोगग्रस्त पत्तियां गिर जाती हैं। यदि पौधों पर रोग का आक्रमण अधिक हो तो उन्हें उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

पप) पत्तियों का झुलसा (स्मं` इसपहीज): यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सकी नामक फफूंदी द्वारा होता है। सबसे पहले छोटे–छोटे धब्बे बनते हैं और बाद में मिल कर बादामी बड़े चिकते हो जाते हैं। रोग का प्रकोप पुरानी पत्तियों पर ही अधिक होता है। रोकथाम झुलसा रोग की तरह करें।

पपप) उकठा (`पसज): यह रोग यूजेरियम आक्सीस्पोरम नामक फफूंदी द्वारा होता है। शुरू में रोग का आक्रमण होने पर पत्तियां मुरझाने लगती हैं। फिर शाखा मुरझाती है और धीरे–धीरे पूरा पौधा सूख जाता है। पानी जमा होने वाली भूमि में रोग का प्रकोप अधिक होता है। यदि पौधे को उखाड़ कर बीच में चीर कर देखा जाए तो तने के अंदर बादामी धारी दिखाई देती है। खेत में उचित जल निकास का प्रबंध करें। रोपाई करने से पहले 0.2 प्रतिशत टेफासान या एगलोल कीटनाशक घोल में पौधों की जड़ों को डुबो कर रोपाई करके कुछ रोकथाम की जा सकती है।

तेल की पैदावारः कटाई के बाद 4–5 घंटे तक फसल को छाया में सुखा लें जिससे पौधों की नमी कम हो सके। इस बात का ध्यान रखें कि पौधों को धूप न लगे, वरना तेल की मात्रा कम हो जाएगी। कटाई खुले मौसम में करने से उपज अच्छी मिलती है तथा भाप द्वारा आसवन विधि से तेल निकालें। ताजा वजन के अनुसार पौधों में 0.2–0.3 प्रतिशत तेल होता है। एक एकड़ से 40–60 किलो तेल प्रति वर्ष 2–3 कटाई में प्राप्त होता है। तेल की गुणवता लिनालूल, मिथाईल चेविकोल एवं मिथाईल सिनामेट पर निर्भर करती है।

आय–व्ययः तेल का औसत षव 200–250 रुपए प्रति किलोग्राम है और खेती पर लगभग 3000 रु. प्रति एकड़ खर्च आता है। इस प्रकार लगभग 6000 रु. प्रति एकड़ की आय अप्रैल से नवम्बर तक होती है।

पप. लौंग तुलसी (ओसीमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसीमम)

तुलसी की विभिन्न प्रजातियों में से ओसिमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसिमम एक सुगन्धित तेल वाली बहुवर्षीय फसल है जिसके तेल में लौंग के तेल के सभी गुण होते हैं। इसके तेल में यूजीनोल नामक सुगंधित तत्व होता है।

उपयोगः इसका तेल खाद्य पदार्थों में खुशबू के अलावा दंत चिकित्सा और दंत मंजन में भी प्रयोग किया जाता है।

जलवायुः यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है, जैसे उष्ण, उपउष्ण तथा गर्म आर्द्रता वाले क्षेत्र जहाँ 85–130 सैंटीमीटर वर्षा हो। इसके अलावा इसे शीत एवं उपशीत क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।

भूमिः यद्यपि इसको विभिन्न प्रकार की भूमि पर लगाया जा सकता है परंतु रेतीली दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6.5 से 8.0 हो, अति अनुकूल है।

किस्मः आर. आर. एल. ओ. जी.–14

नर्सरी की तैयारीः नर्सरी की जगह को 3–4 बार अच्छी तरह तैयार करें तथा बाद में एक भाग मिट्टी व एक भाग गोबर की खाद को मिलाकर उठी हुई क्यारियां बनायें ताकि पानी क्यारियों में इकट्ठा न हो। 200 ग्राम बीज एक एकड़ के लिए काफी रहता है। बीज को क्यारियों में छिड़क कर उस पर रेत तथा गोबर की खाद की बारीक तह लगा दें तथा फव्वारे से सिंचाई दें। बीज 10–15 दिन में अंकुरित हो जाते हैं तथा पौधे 4–5 सप्ताह में रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। नर्सरी बिजाई का उपयुक्त समय मार्च का महीना है।

खेत की तैयारीः खेत को 2–3 बार जोतकर अच्छी तरह बारीक तैयार तथा समतल करें ताकि ज्यादा पानी खड़ा न हो सकें।

खादः खेत तैयार करते समय लगभग 10–12 टन गोबर की अच्छी गली सड़ी खाद प्रति एकड़ डालें।

पौध रोपाईः जब पौधों की लंबाई 10–15 सैंमी. हो तथा 5–6 पत्तियां आ जाएं तो खेत में 60 60 सैंमी. रोपाई कर दें। रोपाई के तुरंत बाद पानी अवश्य लगायें।

सिंचाईः आरम्भ में 2–3 हल्की सिंचाई करें ताकि पौधा जड़ पकड़ सकें। बाद में आवश्यकतानुसार पानी लगायें। प्रत्येक कटाई बाद पानी अवश्य लगाएं तथा बाद में गुड़ाई करें।

कटाईः साल में तीन कटाई ली जा सकती है। फूल आने पर फसल को 15–20 सैंटीमीटर जमीन से ऊंचा काटें। कटाई क्रमशः जून, सितंबर और नवंबर मास में लें।

तेल की मात्राः हरे चारे में तेल की मात्रा लगभग 0.4 से 0.5 प्रतिशत होती है। प्रथम वर्ष में लगभग 50–60 लीटर तेल प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है जबकि बाद में यह मात्रा बढ़कर 80–100 लीटर प्रति एकड़ हो जाती है।

आय–व्ययः तेल का औसतन भाव 250 रु प्रति लीटर है। इस प्रकार प्रथम वर्ष में लगभग 8,000–9,000 रु तथा बाद में 15,000–20,000 रु प्रति एकड़ तक लाभ मिल जाता है।

सुविचार

परिणामों का निर्णय करना हमारा कार्यक्षेत्र नहीं। हम तो एकमात्र कार्य करने के लिए उत्तरदायी हैं।

- गीता

हसंते रहो!!

प्रेमी ने अपनी प्रेमिका से पूछा - डियर ! मैं तुम्हारे पिताजी से शादी की बात किस समय करूं ?
प्रेमिका ने कहा - जब कभी मेरे पिताजी के पैर में जूते न हों

***

पत्नी अपने पति से बोली - रात को तुम सपने में मुझे गालियां दे रहे थे और मेरे मां-बाप को कोस रहे थे , क्यों ?
पति ने कहा- झूठ बोलती हो तुम ! मैं उस वक्त सोया ही नहीं था

- यशस्विन

आर्थिक समृद्धि के लिए ग्वारपाठा की खेती

गंगाराम ओर मोहन लाल जाखड़
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर– 303329
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर)

ग्वारपाठा शुष्क क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण वनस्पति है। प्राचीनकाल से ही भारत के लोगों को इस महत्वपूर्ण पौधे के बारे में वृहद जानकारी रही है। इसे घृतकुमार, घीकुंआर, मुसाबर आदि अनेक नामों से जाना जाता है। इसका ग्रीक–लेटिन भाषा में वानस्पतिक नाम "एलो" है और यह "लिलिएसी" कुल का पौधा है। ग्वारपाठा को "इन्डियन एलो" भी कहते हैं जिनमें से केवल चार प्रजातियाँ ही भारत में पाई जाती हैं। विश्व के अनेक भागों में ग्वारपाठा के पौधे पाये जाते हैं। भारत के अनेक राज्यों जैसे राजस्थान, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि में यह स्वतः उगने (जंगली) वाले पौधों की श्रेणी में आता है। व्यवसायिक स्तर पर इसकी काश्त बहुत ही कम पैमाने पर की जाती है। शुष्क क्षेत्र में इसकी खेती लाभप्रद है। इसकी खेती न केवल आमदनी बढ़ाने का माध्यम बन सकती है बल्कि इसके औषधिय गुण असाध्य रोगों के उपचार के काम में लिए जा सकते हैं। बारानी क्षेत्रों में इसकी खेती पर्यावरण सुधार व पारिस्थितिक विकास के अलावा कृषकों के लिए सब्जी फसल के रूप में भी लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

औषधीय महत्व :– कमलाकृति का यह पौधा देखने में सुन्दर व आकर्षक होता है। औषधीय गुणों के कारण ग्वारपाठा का महत्व और भी बढ़ जाता है। आयुर्वेद में रोगों के उपचार के लिए इसकी पत्तियों का रस व गूदा वृहत पैमाने पर उपयोग में लिया जाता है। ग्वारपाठा की एक स्वस्थ पत्ती में 1.6 से 6.87 मिग्रा. प्रति 100 मिलीलीटर "एलोइन" औषधिय गुण वाला तत्व पाया जाता है। इसका उपयोग पेट दर्द, पेट साफ करने, वायुविकार, त्वचारोग, घावों व जलने पर, कैथरटिक, कूलिंग, बुखार, तिल्ली एवं यकृत आदि अनेक व्याधियों के उपचार में किया जाता है। इसकी जड़े उल्टी आदि अनेक विकारों में उपचार के लिए काम में ली जाती है। पशुओं की उदरव्याधि में इसकी पत्तियों का गुदा बहुत ही गुणकारी होता है। आजकल सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री में इसका काफी प्रयोग किया जाने लगा है। पूरी तरह पकी हुई पत्तियाँ विभिन्न प्रकार के शैम्पू, फेसपैक, फेसक्रीम, मोशचराइजर आदि बनाने के काम आती है।

ग्वारपाठा की विधिवत काश्त करने के लिए उन सभी बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है जो प्रायः अन्य सभी फसलों के लिए आवश्यक है। परन्तु परिस्थिति सहिष्णु पौधा होने के कारण इसमें कम देख–रेख की आवश्यकता होती है।

उष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में इसकी खेती की जा सकती है। अच्छे जल निकास वाली रेतीली, बजरी युक्त अथवा कंकरीली चिकनी दोमट मिट्टी ग्वारपाठा की खेती के लिए उपयुक्त होती है। चट्टानों, उर्वराशक्ति वाली अथवा वर्षा आधारित बारानी भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है। यह अत्यधिक सूखा सहिष्णु पौधा है अतः शुष्क क्षेत्र इसकी खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। न्यूनतम वर्षा (100–300 मिली.) एवं लवणीय पानी वाले क्षेत्रों में भी इसकी खेती की जा सकती है। परन्तु इसके पौधों पर ठण्ड व पाले का प्रभाव कम पड़ता है।

प्रवर्धन एवं पौध–रोपण :– ग्वारपाठा का पौधा वयस्क पौधो से सावधानीपूर्वक सकर्स को निकाल कर अन्य स्थान पर प्रतिस्थापित करके नए पौधे तैयार कर लेते हैं। एक पौधे से एक वर्ष में लगभग 5–10 सकर्स प्राप्त होते हैं। पौधे रोपने के लिए दो–तीन फीट की दूरी पर छोटे–छोटे गडढे तैयार करने चाहिए। प्रत्येक गडढे में अच्छी सड़ी गोबर की खाद मिलाकर पौधे की रोपाई कर देनी चाहिए। पौधे की रोपाई क्यारी बनाकर या कतार में उचित दूरी पर (60 ग 100 सेमी) की जा सकती है। पौधा रोपण का कार्य वर्षा ऋतु (जुलाई–अगस्त) में करना चाहिए। जहाँ पर सिंचाई की व्यवस्था हो वहाँ पर वर्ष भर में कभी भी पौधे लगाए जा सकते हैं। फिर भी फरवरी माह ऐसे स्थानों के लिए उपयुक्त है। रोपाई के एक सप्ताह तक नियमित बहुत हल्की सिंचाई करने से शतत प्रतिशत पौधे सफल हो जाते हैं। फलदार बाग में खाली पड़ी भूमि में भी इसके पौधे लगाए जा सकते हैं।

साधारणतया ग्वारपाठा की फसल में नियमित सिंचाई व खाद की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी समय–समय पर थोड़ी सिंचाई व खाद–उर्वरक देकर अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है। गोबर की खाद 100 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तथा 25 ग्राम डाई अमोनिया फास्फेट प्रति पौधे की दर से प्रति वर्ष देकर पत्तियों का भरपूर उत्पादन लिया जा सकता है। नत्रजन उर्वरक (नाइट्रोजन फर्टीलाइजर) की पहली खुराक जुलाई माह में तथा दूसरी फरवरी माह में दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त गोबर की खाद जुलाई माह में देना भी आवश्यक है। अक्टूबर माह के मध्य 2 प्रतिशत यूरिया का छिड़काव उत्पादन बढ़ाने में सहायक होता है। विधिवत स्थापित पौधों को गर्मी में 8–10 दिन व सर्दी में 15–20 दिनों के अन्तराल से पानी देना लाभकर होता है। इस प्रकार नियमित सिंचाई करने से पत्तियाँ अधिक मोटी व गूदेदार होती हैं। यद्यपि महीने भर तक बिना सिंचाई के भी पौधे जीवित रह सकते हैं परन्तु इससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। व्यवसायिक स्तर पर खेती करने के लिए उपर्युक्त आधार पर सिंचाई करके अधिकतम उपज प्राप्त की जा सकती है।

खरपतवार नियंत्रण व समय पर निराई–गुड़ाई अन्य फसलों के जैसे ही इसमें भी आवश्यक होती है। नए सकर्स को मूल पौधे से समय–समय पर अलग करते रहने से उपज में वृद्धि होती है।

अधिक उपज प्रौद्यौगिकी :– ग्वारपाठा में पत्तियों का उत्पादन पौधे रोपाई के दूसरे वर्ष से प्रारम्भ हो जाता है। लगभग एक माह के अन्तराल से पौधे की सबसे निचली पूर्ण पकी हुई पत्तियों की कटाई सब्जी के लिए की जा सकती है। एक वयस्क पौधे से एक वर्ष में औसतन 3–5 कि.ग्रा. पत्तियां प्राप्त की जा सकती है। पौधे से पत्तियों की कटाई सावधानीपूर्वक करनी चाहिए। पत्तियाँ काटते समय इसके मुख्य तने को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए। पत्तियाँ तोड़ने के बाद इनको भली प्रकार से धोकर व बांधकर बाजार में ले जाना चाहिए। बाजार में बेचने के लिए पर्याप्त मात्रा में कटाई कर, साफ व पैक करके भेजा जाना चाहिए ताकि पत्तियों को किसी प्रकार की हानि न हो। अच्छी तरह पैकर न करने से पत्तियाँ क्षतिग्रस्त हो सकती हैं। इस प्रकार वैज्ञानिक विधि से ग्वारपाठा की खेती से पौध रोपाई के दूसरे वर्ष से ही नियमित आय अर्जित की जा सकती है। निश्चित रूप से हम यह कह सकते है कि मरूक्षेत्र में ग्वारपाठा की खेती अत्यंत लाभप्रद व्यवसाय साबित हो सकता है। शुष्क क्षेत्र उद्यानिकी विकास के साथ ही किसानों को इससे अच्छी आय भी मिल सकती है।

(पाक्षिक राशि फल)

15–11–2013 से 30–11–2013

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	पिछले समय से चल रही बाधाओं का अन्त, धन, धर्म, प्रतिष्ठा वृद्धि, पारिवारिक सुख।
BKT	प्रयत्नों से लाभ, मान प्रतिष्ठा वृद्धि, आर्थिक लाभ की प्राप्ति का योग बनता है।
CLU	विरोधी परास्त आत्म विश्वास बढे, धन वृद्धि, सोभाग्य की प्राप्ति।
DMU	परेशानियों में निम्नता, धीरे–धीरे प्रयत्नों से लाभ, धन लाभ की सम्भावना।
NEW	परेशानियों का अन्त, व्यापार लाभ, प्रतिष्ठा वृद्धि, मित्रों से सहयोग।
FOX	धन लाभ, भूमि पुत्र, स्त्री तथा प्रभुत्व का लाभ।
GPY	मानसिक तनाव के साथ धन लाभ, लाभ कम खर्च अधिक।
HQZ	धन सम्मान, पिछले समय से चल रही बधाओं का अन्त, नये कार्य की योजना बनेगी।
IR	यात्रा योग, अपने अधिकारियों द्वारा सहयोग।

देवउठनी एकादशी

देवताओं के जागने के बाद मंगल-आयोजनों का दौर आरंभ हो जाएगा। अबूझ मुहूर्तों में से एक माने जाने वाली देवउठनी एकादशी पर त्रिबल शुद्धि नहीं होने से इस बार इस दिन विवाह नहीं होंगे। हालांकि १३ नवंबर को देवउठनी एकादशी के बाद १८ नवंबर से देवशयनी एकादशी यानि ९ जुलाई २०१४ तक विवाह के लिए ८१ मुहूर्त हैं।

चार माह के विश्राम के बाद देव १३ नवंबर को जागेंगे। इस बार सूर्य के नीच राशि तुला में होने से त्रिबल शुद्धि नहीं होगी। १६ नवम्बर को सूर्य के वृश्चिक राशि में आने के बाद १८ नवंबर से विवाह प्रारंभ होंगे।

विनय भाई शाह.
सूरत

सृष्टी एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः...
संस्था का नामः...
पूरा पताः...
ग्राम :...................................तहसील :..

जिलाः...................................राज्यः..............................पिन कोड

दूरभाष कार्यः...................................निवासः...................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 | तीन वर्ष :351 | पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :...................................

बैंक का नामः.................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.......................दिनांकः................

स्थानः.................................. प्रतिनिधि का नामः......................हस्ताक्षर सदस्यः................

दिनांकः.......................

एवं हस्ताक्षर | एवं संस्था सील

सृष्टी एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

मावा या खोया की बर्फी

मावा से अनेको प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं. मावा की बर्फी बहुत ही स्वादिष्ट होती है, और बड़ी आसानी से बनाई जा सकती है. आइये मावा की बर्फी बनायें.

आवश्यक सामग्री - घी - १ टेबिल स्पून
चीनी - १५० ग्राम (चीनी स्वादानुसार थोड़ी कम ज्यादा की जा सकती है)
इलाइची - ४-५ (छील कर पीस लीजिये)यदि आप चाहें तो
बादाम - ६-७ (बारीक कतर लीजिये)
पिस्ते - ६-७ (बारीक कतर लीजिये)

विधि भारी तले की कढ़ाई में घी डाल कर मावा को धीमी गैस पर, हल्का गुलाबी होने तक भून कर, किसी प्याले में निकाल कर ठंडा होने के लिये रख दीजिये.

एक प्लेट या ट्रे को घी लगा कर चिकना करके रख लीजिये.

कढ़ाई में चीनी डालिये, चीनी की मात्रा का १/३ पानी, चीनी में मिलाइये(चीनी २५० ग्राम तब पानी की मात्रा लगभग ८० ग्राम हो). इस तरह की चाशनी बनाइये कि चाशनी प्लेट में डालते ही तुरन्त जमने लगे.(अगुली अंगूठे के बीच चिपका कर देख लीजिये, वह बहुत ही गाड़ी और तुरन्त जमने लगेगी). चाशनी बनने के बाद गैस बन्द कर दीजिये.

चाशनी को चमचे से चलाते हुये ठंडा कीजिये और जब वह जमने पर आ जाय, तब मावा लेकर चाशनी में डालें और अच्छी तरह चमचे से चलाते हुये मिलाइये, इलाइची पाउडर भी मिला दीजिये.

मिश्रण को घी लगी हुई प्लेट में डालिये समान रूप से फैलाइये, ऊपर से कतरे हुये बादाम और पिस्ते डाल कर सजाइये.

बर्फी को जमने में करीब २०-२४ घंटे लग जाते हैं. दूसरे दिन जमी हुई बर्फी को अपने मन पसन्द आकार में काट लीजिये.

बहुत ही स्वादिष्ट बर्फी बनी है, बर्फी को एअर टाइट कन्टेनर में रखकर फ्रिज में रखिये, और जब भी आपका मन करे बर्फी निकालिये और खाइये.

कल्पना ऋषि कपिल

ठंडे बस्ते में कृषि निदेशक की संस्तुति

देहरादूनः ऊपरी पहुंच हो तो कोई क्या बिगाड़ सकता है। फिर न नियम-कायदों की चिंता और न किसानों के हित की परवाह। कृषि विभाग में फसल बीमा योजना के मामले में यही तस्वीर है। इसमें करोड़ों का घपला प्रकाश में आने के बाद दोषी करार दिए गए संयुक्त निदेशक सांख्यिकी को सौंपी गई चार्जशीट का जो जवाब आया है, उसे कृषि निदेशक ने खारिज कर उनके निलंबन की संस्तुति की है, लेकिन शासन स्तर पर मामले को ठंडे बस्ते में डालने की तैयारी है। कृषि निदेशक की संस्तुति के संबंध में शासन का कहना है कि इसका परीक्षण चल रहा है और विधानसभा सत्र के बाद ही इस कोई निर्णय लिया जाएगा।

केंद्र सरकार की मॉडिफाइड राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना २०१०-११ में उत्तराखंड के दो जिलों देहरादून व हरिद्वार में लागू की गई। पायलेट आधार पर संचालित इस योजना में जिला चयन से लेकर बीमा कंपनियों को लाभ पहुंचाने के साथ अधिक दरों पर प्रीमियम निर्धारित करने में तो घपला किया ही गया। जो किसान इससे आच्छादित नहीं थे, उनका भी प्रीमियम काट दिया गया और किसी का पूरा रकबा ही अधिसूचित फसल में शामिल कर प्रीमियम लिया। योजना में ६५ लाख से ज्यादा की राशि में अनियमितता की बात तो खुद कृषि विभाग ही स्वीकार कर रहा है, जबकि यह रकम करोड़ों में आंकी जा रही है। मजेदार बात यह रही कि कृषि निदेशक की ओर से इस मामले में जिम्मेदार ठहराए गए संयुक्त निदेशक सांख्यिकी के खिलाफ कार्रवाई की संस्तुति की गई, लेकिन मसला ठंडे बस्ते में चला गया।

यान फसल बीमा योजना में स्याह को सफेद बनाने का असफल प्रयास किया जा रहा है। संभावना जताई गई है कि डाटा सेंटर एवं प्रशिक्षण, एपीआइबी जैसे कार्यों से भी वे भविष्य में पल्ला झाड़ सकते हैं। उन्होंने संयुक्त निदेशक सांख्यिकी को निलंबित कर मामले की उच्च स्तरीय जांच की संस्तुति की है। साथ ही शासन से इस प्रकरण पर तत्परता से कार्यवाही का आग्रह किया गया है, ताकि कृषकों को न्याय मिल सके।

१९८२ में लगाए पेड़ ३० वर्ष से भी जस के तस

हल्द्वानी : हाइवे के किनारे लगाए जाने वाले पेड़ छाया, सुंदरता एवं सुरक्षा देने वाले होते हैं, लेकिन यहां यही खतरे का सबब बन रहे हैं। विद्युत आपूर्ति में बाधक बने यूकेलिप्टस के पेड़ मानक से भी दोगुनी आयु के हो चुके हैं और यहां हवा का झोंका भी राहगीरों को डरा देता है।

रामपुर रोड हाइवे पर वर्ष १९८२ में दोनों ओर यूकेलिप्टस के पौध रोपे गए थे। देवलचौड़ से बेलबाबा तक तब जंगल होने की दृष्टि से इनका रोपण किया गया था। धीरे-धीरे आबादी के विस्तार के साथ कुछ जगहों पर यह पेड़ कटते गए, लेकिन अधिकांश जगहों पर अभी भी विशालकाय पेड़ खड़े हैं। वन विभाग भी मानता है कि यूकेलिप्टस की मानक आयु १५ वर्ष तक होती है। इसके बाद इन्हें काट दिया जाना चाहिए। लिप्टस का प्रयोग सामान्यतया पेपर मिल में होता है। जहां इससे कागज तैयार होता है। दूसरी ओर मानक से दोगुनी आयु के हो चुके यह पेड़ अब हादसों का सबब बन रहे हैं। आंधी-तूफान तो दूर हल्की हवा के झौंके भी इन पेड़ों व टहनियों के टूटने का कारण बन रहे हैं। यहीं नहीं इन्हीं के नीचे से एचटी व एलटी की बिजली लाइनें भी गुजरती हैं। ऐसे में बिजली फॉल्ट भी यहां आए दिन हो रहा है। राहगीरों एवं वाहन चालकों पर टहनियां गिरने से कई बार सड़क दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं। जनजागरण समिति ग्रीन सिटी के अध्यक्ष यशवंत सिंह व महासचिव नवीन वर्मा कहते हैं कि वन विभाग से इन पेड़ों को काटने की मांग की गई है। साथ ही इनके स्थान पर हरियाली देने वाले एवं अधिक आयु वाले पौधे लगाए जाने चाहिए। जो पर्यावरण की दृष्टि से भी अनुकूल हों।

भांग के पेड़ नष्ट किए

भीमतालः विकासखंड की ग्राम सभा पिनारौ भौंर्सा और बानना में पुलिस ने ग्राम प्रधानों के साथ खेतों के किनारे उगी भांग की झाड़ियों को नष्ट किया।

थानाध्यक्ष इंद्र सिंह राणा के

नेतृत्व में चलाए गए विशेष अभियान में लगभग ४० खेतों के किनारे उगी झाड़ियों को नष्ट किया गया। बाद में सलड़ी के दुकानदारों को बुलाकर बैठक आयोजित की गई। इसमें पुलिस अफसरों ने दुकानों पर शराब न पिलाने की अपील की। राणा ने भविष्य में दुकानों पर शराब पिलाने वालों पर सराय एक्ट के तहत कार्रवाई करने की चेतावनी दी। अभियान में एसआइ गणेश सुप्याल भी शामिल थे।

उपभोक्ता ने बनाई सीडी

राशन डीलर ब्लैक कर रहा था गेहूं व केरोसिन

अजमेर. भले ही रसद विभाग जिलेभर में राशन की दुकानों पर हो रही कालाबाजारी को पूरी तरह रोकने में नाकाम साबित रहा हो, लेकिन अब उपभोक्ता जागरूक हो चुके हैं। ब्यावर का एक राशन डीलर खुले आम केरोसिन और खाद्य सुरक्षा योजना के तहत सप्लाई हुए गेहूं को मोटे दाम वसूलकर बेच रहा था।

यह कालाबाजारी एक जागरूक उपभोक्ता को नागवार गुजरी उसने राशन डीलर की इस हरकत की वीडियो सीडी बनाकर डीएसओ के समक्ष पेश कर दी। डीएसओ ने सीडी देखने के बाद हाथोंहाथ कार्रवाई कर उक्त राशन डीलर को सस्पेंड कर दिया।

जबकि अजमेर शहर के एक अन्य राशन डीलर को गेहूं वितरण में भारी अनियमितताओं के चलते निलंबित कर दिया गया। दोनों आरोपियों की दुकानें नजदीकी राशन की दुकान से अटैच की गई है। इसी तरह गेहूं वितरण की रिपोर्ट पेश नहीं करने के कारण दो राशन डीलर्स को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

रसद विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक ब्यावर में दुकान संख्या ५५ के राशन डीलर कन्हैयालाल कुमावत और अजमेर शहर में दुकान संख्या ८७ के राशन डीलर लेखराज बाकोलिया को वितरण में अनियमितताओं के चलते निलंबित किया गया। कन्हैयालाल के खिलाफ एक उपभोक्ता ने लिखित शिकायत के साथ एक सीडी पेश की थी।

३०० ग्राम अफीम बरामद एक युवक गिरफ्तार

जोधपुर. शहर पुलिस द्वारा चलाए जा रहे बदमाशों के धरपकड़ अभियान में प्रताप नगर पुलिस ने देवनगर तिराहा पर बुधवार शाम को ३०० ग्राम अफीम ले जाते एक युवक को गिरफ्तार किया। एसीपी (प्रताप नगर) ललित शर्मा ने बताया कि बुधवार शाम को प्रताप नगर थाने के उप निरीक्षक सोमकरण की टीम को सूचना मिली कि देवनगर तिराहा के निकट रहने वाले भंवरलाल विश्नोई के पास अफीम है। पुख्ता जानकारी के आधार पर एएसआई सुखराम के साथ कांस्टेबल अनिल कुमार, पोकरमल की टीम ने देवनगर तिराहा पर नाकाबंदी की। इसी दौरान वहां से गुजर रहे मूलतया कल्याणपुर के डोली व हाल पाल लिंक रोड राजीव गांधी कॉलोनी निवासी भंवरलाल विश्नोई (३०) पुत्र देवाराम को रोक कर पूछताछ की। संदेह होने पर तलाशी ली तो उसके पास ३०० ग्राम अफीम बरामद हुई। इस पर आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया।

शुगर मिल में नई स्ट्रैंथ न लगाई जाए

पानीपत : दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों का पांचवें दिन सोमवार को भी शुगर मिल के सामने धरना जारी रहा। डेली वेजिज कर्मचारियों को नियमित करने की मांग को लेकर कर्मचारियों ने मिल प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी कर रोष जताया। कर्मचारी मंगलवार से भूख हड़ताल शुरू करेंगे और प्रतिदिन दो कर्मचारी भूख हड़ताल पर बैठेंगे दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को नियमित करने की मांग को लेकर द पानीपत को-आपरेटिव शुगर मिल डेली वेजिज वर्कर यूनियन ने शुगर मिल के सामने ३१ अक्टूबर से धरना शुरू कर रखा है। प्रधान भीम सिंह ने कहा है कि १७३ कर्मचारी पिछले १० से ३० वर्षो तक शुगर मिल में काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने महम शुगर मिल में २८ सितंबर २००८ को दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को नियमित करने की घोषणा की थी, लेकिन आज तक कर्मचारियों को नियमित नहीं किया गया। पिछले दो वर्षो से शुगर मिल के गेट के सामने धरना देकर काली दीपावली मना रहे हैं। बड़े ही दुख की बात है कि सबसे पुरानी शुगर मिल होने के बाद भी शुगर फैड ने नई स्ट्रंथ लागू कर दी, जबकि पिछले वर्ष बोर्ड निदेशक ने बोर्ड की मीटिंग में नई स्ट्रैंथ को लागू करने से इंकार कर दिया था। फिर भी हमें पक्का नहीं किया गया। इसलिए सभी दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों में रोष है। कर्मचारियों का कहना है हमारी पुरानी शुगर मिल होते हुए नई स्ट्रैंथ न लगाई जाए और दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को पक्का किया जाए। इस अवसर पर सचिव कृष्ण, रणबीर, नागेंद्र, शमशेर सिंह व वीरेंद्र शर्मा आदि उपस्थित रहे।

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

मुंबई 08898600347
जयपुर 01413130277
पंजाब.,.....09820388538
दिल्ली .,,,,,09582444313

सृष्टी एग्रो किसानों के बीच सबसे लोकप्रिय समाचार पत्र बन गया है! साथ ही ग्रामीड महिलाओं के उत्सुकता का कारण बना! किसानों ने सृष्टी एग्रो में आने वाले लेखों से मिल रहे लाभ के बारे में जानकारी दी!

राजस्थान मंडप का शुभारंभ किया

जयपुर, 14 नवम्बर। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में गुरुवार को शुरू हुए 14 दिवसीय 33 वें भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में स्थित राजस्थान मण्डप का दिल्ली में राजस्थान के अतिरिक्त आवासीय आयुक्त श्री विमल शर्मा ने फीता काट कर विधिवत् रूप से शुभारंभ किया।

राजस्थान लघु उद्योग निगम के कंपनी सचिव एवं मण्डप निदेशक श्री रवि अग्रवाल ने श्री विमल शर्मा का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। श्री शर्मा ने सर्वप्रथम मुख्य थीम एरिया में निर्मित भरतपुर के मोती महल के प्रवेश द्वार की प्रतिकृत्ति के समीप स्थापित गणेश प्रतिमा के आगे दीप प्रज्वलित कर पूजा-अर्चना की। इस मौके पर राजस्थान मण्डप के प्रभारी श्री आर.जी. घई, चिरंजन एजेंसी के मुख्य अधिशासी अधिकारी श्री रंजन खन्ना और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद थे। मंडप निदेशक श्री अग्रवाल ने श्री शर्मा को मण्डप का अवलोकन करवाते हुए बताया कि इस बार मण्डप में व्यापार मेला की थीम के अनुरूप भरतपुर के मोतीमहल की कलात्मक प्रतिकृत्ति बनाई गई है, जिसे राजस्थान के हस्त शिल्पियों ने बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया है। जालीनुमा कलाकृत्तियों से विभिन्न रंगों एवं कांच की सुनहरी नक्काशी से सजे-धजे मोतीमहल की नयनाभिरामी इस झांकी को बनाने के लिए राजस्थान से विशेषरूप से कलाकारों को नई दिल्ली बुलाया गया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले की इस वर्ष की थीम ''समावेशी विकास'' को केन्द्र में रख कर राजस्थान के विश्व प्रसिद्ध हस्तशिल्प उत्पादों को मण्डप में विशेष स्थान दिया गया है। इनमें देश-विदेश में धूम मचाने वाले राजस्थान के हस्तशिल्प उत्पादों, राजस्थान प्रिंट की जग प्रसिद्ध साड़ियों, राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं, कलात्मक खिलौनों, सजावटी सामान, फर्नीचर आदि को प्रमुखता से दर्शाया गया है।

उपभोक्ता ने बनाई सीडी

राशन डीलर ब्लैक कर रहा था गेहूं व केरोसिन

अजमेर. भले ही रसद विभाग जिलेभर में राशन की दुकानों पर हो रही कालाबाजारी को पूरी तरह रोकने में नाकाम साबित रहा हो, लेकिन अब उपभोक्ता जागरूक हो चुके हैं। ब्यावर का एक राशन डीलर खुले आम केरोसिन और खाद्य सुरक्षा योजना के तहत सप्लाई हुए गेहूं को मोटे दाम वसूलकर बेच रहा था। यह कालाबाजारी एक जागरूक उपभोक्ता को नागवार गुजरी उसने राशन डीलर की इस हरकत की वीडियो सीडी बनाकर डीएसओ के समक्ष पेश कर दी। डीएसओ ने सीडी देखने के बाद हाथोंहाथ कार्रवाई कर उक्त राशन डीलर को सस्पेंड कर दिया। जबकि अजमेर शहर के एक अन्य राशन डीलर को गेहूं वितरण में भारी अनियमितताओं के चलते निलंबित कर दिया गया। दोनों आरोपियों की दुकानें नजदीकी राशन की दुकान से अटैच की गई है। इसी तरह गेहूं वितरण की रिपोर्ट पेश नहीं करने के कारण दो राशन डीलर्स को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI
(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals
CONTACT NO.-022-6710-3722
EMAIL:aarti@hindchem.com

गेहूं की बुवाई शुरू, लिखमीसर सहकारी समिति में डीएपी खत्म

लिखमीसर. क्षेत्र के किसानों ने सरसों की नाम मात्र बिजाई के बाद नवंबर माह के पहले सप्ताह में गेहूं की बुवाई शुरू कर दी है। ऐसे में स्थानीय ग्राम सेवा सहकारी समिति में डीएपी खाद न होने से उनको परेशानी हो रही है। किसानों का कहना है कि गेहूं बुवाई के समय में समिति में खाद न मिलने से किसानों को महंगे दामों पर बाजार से घटिया खाद खरीदनी पड़ रही है। ऐसे में क्षेत्र के गांवों के किसानों ने क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अधिकारियों से समिति में खाद उपलब्ध करवाने की मांग की है।

स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री कृषि आदान में उभरता नाम ...

नासिक

स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री के एम् .डी. समीर आर. पाठारे एक विशेष भेट में सृष्टि एग्रो को बताया कि उन्हके उत्पाद मल्टी एक्टिविटी बायो आर्गेनिक ,प्लांट बायो एंजेंस,मक्रोन्यूट्रॉन एवं स्पेशलिटी एग्रो केमिकल इत्यादि उत्पाद का उपयोग करने में फसल में वृदि ,पौदे कि उपज के लिए इन्हके उत्पाद किसानों के लिए कारगर साबीत हुए 'कंपनी का डीलर नेटवर्क बारा राज्यों में विस्कृत है और कंपनी के उत्पाद अंतराष्ट्रीय स्तर पर निर्यात हो रहे है।

कंपनी का लक्ष केमिकल रहित एवं भूमि कि उपजाऊ शक्ति को बढ़ाना है इसी के साथ उन्होंने बताया कि कंपनी पुरे देश में ग्रोथ कर रही है 'कंपनी नवीनतम तकनीकी का शीघ्र विस्तार कर रही है और कहा कि स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री के प्रोडक्ट अधिक नफा व् उत्पादकता बढ़ाने वाले है ,यह कंपनी गुणवत्ता में ही पूर्ण विश्वास रखती है। कंपनी के अन्य उत्पाद के बारे में भी जानकारी दी और कहा स्वरुप एग्रो इंडस्ट्री समृद्दि व् विश्वास का प्रतिक है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com